Volume 2, Issue 4 (Oct-Dec) 2023 ISSN: 2584-0819

साहित्य सिनेमा सेतु

रील से रियल लाइफ तक

साहित्य, शिक्षा, सिनेमा, समाज, कला एवं संस्कृति को समर्पित त्रैमासिक ई-पत्रिका

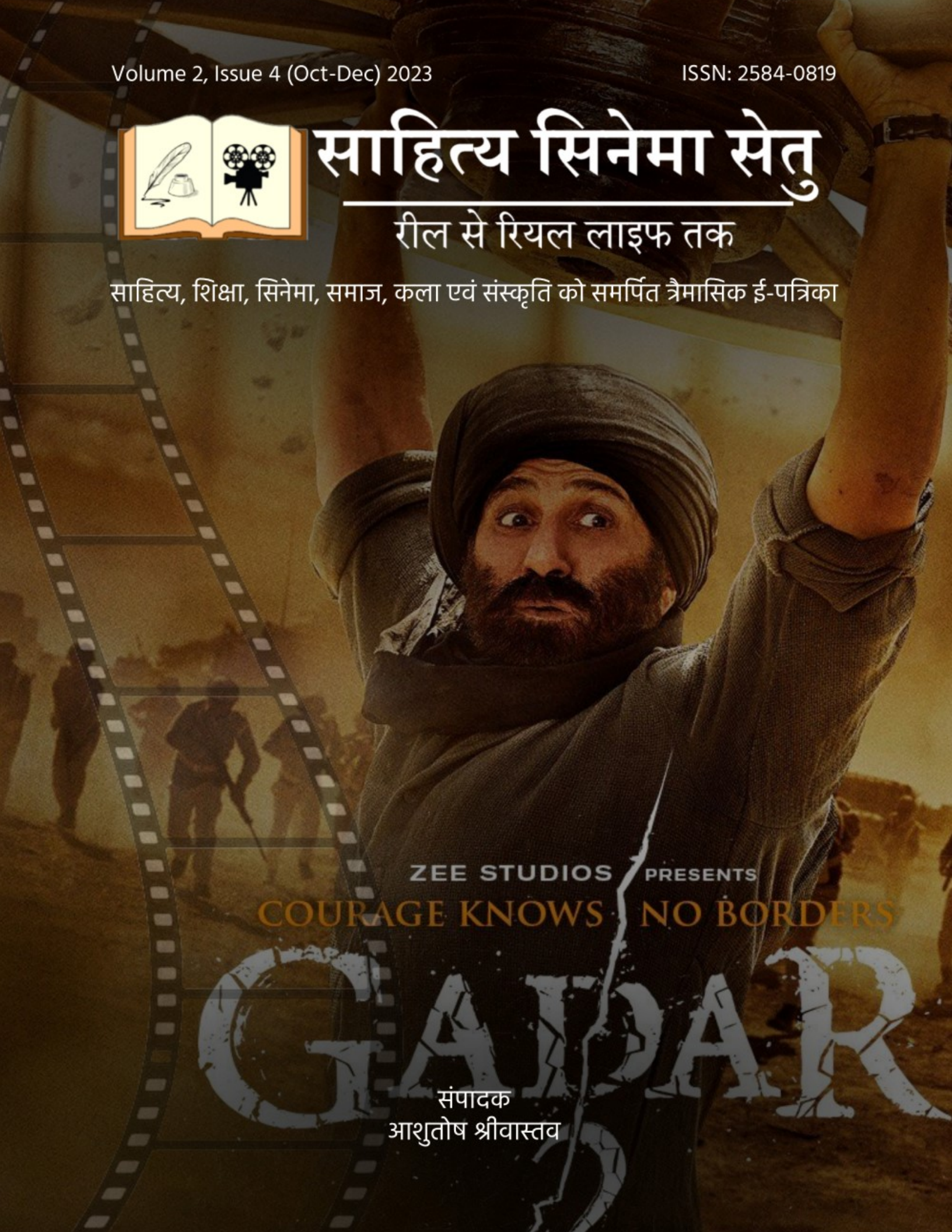

संपादक
आशुतोष श्रीवास्तव

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

परिचय

साहित्य समाज का दर्पण है तो सिनेमा उसका नया अवतार है। साहित्य के बिना सिनेमा अधूरा है। सिनेमा की शुरुआत ही साहित्य से होती है। साहित्य की धरा को सिनेमा बहुआयामी विस्तार देता है। साहित्य, सिनेमा का रूप लेकर उनसे भी संवाद करता है जहाँ साहित्य का मर्म ही नहीं पहुँच पाता। वास्तव में साहित्य और सिनेमा दोनों ने ही अपने शुरुआती दौर से ही समाज को जोड़ने का काम किया है। साहित्य और सिनेमा के इसी सोच को लेकर उसके हर पहलुओं पर नज़र रखने के लिए 'साहित्य सिनेमा सेतु' वेबसाइट एवं त्रैमासिक ई-पत्रिका उपस्थित है। जो रील से रियल लाइफ तक सबकी ख़बर रखता है। ब्लैक एंड व्हाइट के दौर से लेकर रंगीन होती दुनिया की कही अनकही सारी बातों को प्रदर्शित भी करता है। जहाँ साहित्य में इसकी सभी विधाओं- कविता, कहानी, यात्रा वृतांत, डायरी, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज़, अनुवाद आदि को स्थान देता हैं। वहीं सिनेमा के विभिन्न रूपों- वेब सीरीज, सीरियल्स, शॉर्ट फिल्म्स, और डाक्यूमेंटरी आदि विषयों पर भी अपनी पैनी नज़र रखता है। ई-पत्रिका इन सभी विषय-वस्तुओं के साथ जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्टूबर महीने में त्रैमासिक रूप में एवं वेबसाइट नियमित रूप से प्रकाशित की जाएगी।

कार्यक्षेत्र : साहित्य और सिनेमा को प्रभावित करने वाले कारकों समाज, शिक्षा, कला एवं संस्कृति आदि सबकी समसामयिक घटनाओं व ज्वलंत मुद्दों से रूबरू कराना हमारा मुख्य लक्ष्य है। इसी धारणा को साकार करने एवं विस्तार देने हेतु देश-विदेश के समस्त साहित्य और सिनेमा से जुड़े छात्रों, शोधार्थियों, विद्वानों, लेखकों, प्राध्यापकों एवं चिंतकों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया जा रहा है। वेबसाइट एवं ई-पत्रिका से जुड़ने के लिए सभी साहित्य एवं सिनेमा प्रेमियों का तहे दिल से हार्दिक स्वागत है।

उद्देश्य : सही मायनों में साहित्य और सिनेमा के क्षेत्र में हो रहे नित नवीन शोध के साथ-साथ भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों एवं शैक्षिक विरासत को साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में एक धरोहर के रूप में आगे बढ़ाना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है।

संस्थापक/संपादक/प्रकाशक : आशुतोष श्रीवास्तव **स्थायी पता :** सी.सी. रोड, निकट परशुराम चौक, देवरिया, उत्तर प्रदेश - 274001 **पत्राचार :** अशोक विहार, फ़ेज़-4, दिल्ली-110052	**मो. नंबर:** 9899860999 **ईमेल:** sahityacinemasetu@gmail.com info@sahityacinemasetu.com, **वेबसाइट :** www.sahityacinemasetu.com

उद्घोषणा : ई-पत्रिका में प्रकाशित लेखों/रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। इससे संपादकीय विचारों का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद में संपादक अथवा संपादक मंडल का कोई संबंध नहीं होगा। किसी भी वाद-विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा। लेख/रचना प्रकाशन का अंतिम निर्णय एवं कॉपीराइट संपादक के पास सुरक्षित है। ई-पत्रिका पूर्णरूप से अव्यवसायिक है और इसके सभी पद अवैतनिक हैं। आवरण और अंतिम पृष्ठ चित्र गूगल / वेबसाइट आदि से साभार हो सकता है।

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

संपादक मंडल

संपादक
आशुतोष श्रीवास्तव, पीएच.डी. (हिंदी सिनेमा)
ईमेल : ashucinema@gmail.com

उप संपादक
अंकिता श्रीवास्तव, एम.ए. (शिक्षाशास्त्र)
ईमेल : ankiscs@gmail.com

सह संपादक
अनुज कुमार गौतम, पीएच.डी. (अनुवाद)
ईमेल : tathagatanuj@gmail.com

अरुण यादव, सूचना प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ M.Sc(IT)
ईमेल : arun.wcn@gmail.com

बबीता कुमारी, वित्तीय लेखा विशेषज्ञ (M.Com)
ईमेल : babita.wcn@gmail.com

परामर्श मंडल

प्रो. पुनीत विसारिया
अध्यक्ष : हिन्दी विभाग एवं बी.एड. शिक्षा संस्थान,
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय,
झाँसी (उ.प्र.)
ईमेल : puneetbisaria8@gmail.com

प्रो. निरंजन सहाय
विभागाध्यक्ष : हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा
विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी (उ.प्र.)।
ईमेल :drniranjansahay@gmail.com

प्रो. अनीता सिंह
हिंदी विभाग, उदय प्रताप कॉलेज,
वाराणसी (उ.प्र.)।
ईमेल : pksbhu222@gmail.com

इंद्र कुमार दीक्षित
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य एवं मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा,
देवरिया (उ.प्र.)।
ईमेल : indra.kumar.dixit@gmail.com

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

अनुक्रमणिका

संपादकीय	आशुतोष श्रीवास्तव	01
कविता : गली-गली में घूमते	हरी राम मीना	02
कविता : संकल्प	संजय जैन	03
कविता : आदित्य, आदित्य की ओर	कुमार अजस्र	04
व्यंग्य : पबजी-लव जी	दिलीप कुमार	05
कविता : सिसकते किताबों के पन्ने	तुषार पुष्पदीप सूर्यवंशी	07
लेख : दोस्ती	परिवर्तनकारी कुशराज	08
लेख : भगोरिया पर्व	संध्या शर्मा	10
लघुकथा : जानकी का घर	आलोक कौशिक	12
शोध आलेख : 'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में चित्रित नारी सशक्तीकरण	सपना	13
लेख : अजीब समस्या है मेरे देश में	रिचा सिंह चंदेल	20
गदर : जब दर्शकों ने किया समीक्षकों का मुह बंद	आशुतोष श्रीवास्तव	21
लेख : भाषाविज्ञान कला है या विज्ञान	तेजप्रताप टंडन	22
लेख : भोजपुरी लोकगीत परम्परा में अगली कड़ी सोहर गीत	डॉ. विकास चन्द्र मिश्र	24
ग़ज़ल : यहाँ की हवाओं में ज़हर घोलने वाले	मुहम्मद आसिफ़ अली	27
कहानी : ऐसा क्यों है?	सुधीर श्रीवास्तव	28

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

साहित्य तत्कालीन समाज का आईना बतलाते हुए व्यक्ति को कल्पना के स्थान पर यथार्थ की ओर ले जाता है। वह समाज, संस्कृति, राजनीति, सामाजिक और भौतिक स्थिति से हमें रूबरू कराता है। इस अंक में हरिराम मीना की कविता 'गली-गली में घूमते' में स्त्री चेतना के स्वर दिखाई देते हैं, जोकि आह्वान है कि स्त्री अब कमजोर नहीं है बल्कि वह शोषकों को मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम है। वहीं पर, संजय जैन की कविता 'संकल्प' में गिले शिकवे भुला कर दिल में प्यार मोहब्बत की ज्योति जगाने की बात की गई है। तुषार पुष्पदीप सूर्यवंशी की कविता 'सिसकते किताबों के पन्ने' में साहित्य के प्रति अरुचि और अपने सपनों की अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया गया है। दूसरी तरफ, परिवर्तनकारी कुशराज ने अपने आलेख 'दोस्ती' में सच्ची मित्रता के तमाम लक्षण नए पुराने उदाहरण से बताने की सार्थक कोशिश की है। आज के अद्यतन समय में सच्चा दोस्त ढूंढना किसी खजाने को ढूंढना जैसा है। संध्या शर्मा अपने आलेख 'भगोरिया पर्व' में मध्य प्रदेश के निमाड़ में आदिवासियों के भगोरिया पर्व की ऐतिहासिक झांकी प्रस्तुत की है, जिसमें फाल्गुन में महुआ-टेशु के फूलों की उमंग और प्रेम को आदिवासी समाज-संस्कृति के रंग की रोचक अभिव्यक्ति है। आदिवासियों में जीवनसाथी के चुनाव के रस्मों-रिवाजों का मार्मिक चित्रण किया है। आलोक कौशिक की लघुकथा 'जानकी का घर' में समाज में स्त्री शिक्षा को दबाने और उसे सेविका का दर्जा देकर गुलाम बांए रखने का प्रतिरोध किया है।

अक्टूबर का महीना शुरू होते हीं हमारे देश में सांस्कृतिक धार्मिक पर्व-त्योहार शुरू हो जाते हैं। हिंदी सिनेमा की दृष्टि से देखा जाए तो अभी फिलहाल सन्नी पाजी की फ़िल्म गदर पार्ट 2 ने सिनेमाघरों में एक अलग सा माहौल बना रखा है। कई दिनों से बॉलीवुड में पड़े टिकट खिड़की के अकाल में मानों टिकटों की बाढ़ सी ला दी है। त्योहारों के मौसम में इसे सिनेमा का उत्सव कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। दूसरी ओर हमारे देश के वैज्ञानिकों ने अभूतपूर्व सफलता हासिल करते हुए मिशन चन्द्रयान के बाद अब सूर्य का विस्तृत अध्ययन करने के लिए मिशन आदित्य पर लगे हैं। इसरो के अनुसार सूर्य का अध्ययन करने वाला पहला अंतरिक्ष आधारित भारतीय मिशन होगा।

पत्रिका का यह अंक देश की साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक एवं सिनेमाई स्थितियों की हलचल सभी को अपने आप में समेटे हुए है। पब जी के बहाने देश में जो अंतरराष्ट्रीय खबरें बनीं उस पर व्यंग्य हैं तो वहीं दूसरी ओर 'अजीब समस्या है मेरे देश में' और 'मेरे सपनों का समाज' लेख के जरिये देश के प्रति चिंता और प्रेम दोनों को ही समाहित किया गया है। साहित्यिक दृष्टि से शोध आलेख में 'गदर की चिनगारियाँ' नाटक संग्रह में चित्रित नारी सशक्तीकरण, लेख में 'भाषा विज्ञान कला है या विज्ञान' और भोजपुरी लोक गीत परंपरा में सोहर गीतों के योगदान को बताया है। अंत में ग़ज़ल 'यहाँ की हवाओं में ज़हर घोलने वाले' सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अच्छा संदेश देती है। आलेख, शोध आलेख, कविता, कहानी और समीक्षा भेजने वाले सभी सुधी जनों का हार्दिक आभार। आप सभी का प्यार ऐसे ही बना रहेगा। आपके अमूल्य सुझावों की अभिलाषा में प्रतीक्षारत...

-आशुतोष श्रीवास्तव

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

कविता : गली गली में घूमते

-हरी राम मीना
एम.ए. (हिंदी), एम.फिल., नेट, साहित्य (कविता) एवं सिनेमा में विशेष रुचि, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ, आलेख एवं शोध प्रकाशित, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शिरकत।
https://sahityacinemasetu.com/poem-gali-gali-me-ghumate/

गली-गली में घूमते...
शराफ़त का मुखौटा लगाए
कभी सहायक बनकर
कभी खास बनकर।
उठाते मजबूरी का फायदा
नौकरी, धन और प्रेम का
झांसा देकर।

नजरों में
कच्चा खा जाने की प्यास
मन में हवस का अरमान लिए
करते हैं रतिभरा आह्वान।
चेहरे पर कटीली मुस्कान
नहीं देखते
उम्र और बंधन।

हमेशा घात लगाए रहते हैं
लकड़बग्घे की तरह
शुरू कर देते हैं
जिंदे को खाना
मौका तक नहीं देते
संभलने का।

सुनसान गली में
नुक्कड़ों पर
सुबह, दोपहर और शाम
नजरें ताकती
अपना शिकार।

तुझे नहीं बहना है
भावनाओं में
अंबर के लालच में
कुंदन रजत की चमक में
आत्मघाती अंधे प्रेम-विश्वास में।

बनाए रखना है
आत्मविश्वास और
पिछवाड़े पर मारकर ठोकर
जमाने को
सिद्ध करना है कि
तुम अब अबला नहीं हो।

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

कविता : संकल्प

-संजय जैन
हिंदी मास्टर ऑफ़ कॉमर्स के साथ ही एक्सपोर्ट मैनेजमेंट, लेख, कविताएं और गीत आदि लिखने में विशेष रुचि
मुम्बई के नवभारत टाईम्स में ब्लॉग लेखन, हिंदी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिले इसके लिए निरंतर प्रयासरत।
https://sahityacinemasetu.com/kavita-sankalp

हर एक अंत से ही
नई शुरुआत होती है।
भूलाकर गिले शिकवो को
नई शुरुआत करते हैं।
लोग तो आते हैं जाते हैं...

पर उनके काम याद आते है।
शायद इसकी को दुनियांदारी
दुनियां वाले कहते है।।

दिल व्याकुल हो या चंचल
ये किसी पर तो आता है।
हर किसी के जीवन में
ये लम्हा निश्चित आता है।
जब दिल और दिमाग
किसी के बस नहीं रहता।
बस उस साथी को
पल पल खोजता रहता है।।

उमंगो से भरा हो दिल
तो तरंगे लहराती है।
जो दिल में हो रंग
वो ही जुबान कहती है।
फिर सज संवर कर
दुनिया को दिखती है।
और अपनी मोहब्बत को
परवान चढ़ाती है।।

आँखो को आँखो से मिलाते हैं
दिल की पीड़ा को बताते हैं।
प्यार मोहब्बत की ज्योत को
दिलों में हम जलाते हैं।
अमन चैन का वातावरण
पूरी दुनिया में फैलाते हैं।
और यही संकल्प लेने को
सारी दुनिया को कहते हैं।।

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

कविता : आदित्य, आदित्य की ओर

-कुमार अजस्र
हिंदी प्राध्यापक, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुढ़ा नाथावतान, बूंदी (राजस्थान)
https://sahityacinemasetu.com/kavita-aditiya-aditiya-or-chala/

धरती से उड़कर आदित्य,
उस आदित्य ओर चला।
बदल-बदल कर वह कक्षाएँ,
एक बार फिर वो सम्भला।

इसरो की आशाएँ उस पर।
भारत-विश्व स्वाभिमान है।
अजस्र भास्कर देख नजारा,
विस्मय स्वर उससे निकला।

कदम-कदम आगे ही बढ़ता,
'आदित्य', 'आदित्य' का है जो पथिक।
इसरो ने पाथेय दिया जो,
मार्ग कट गया सभी, क्षणिक।

'लक्ष्य सफल हो' भारत-जन,
सब देते हैं उसको आशीष।

भारत-अजस्र अंतरिक्ष प्रसारित,
उस आदित्य की भावी जीत।
टिक-टिक, टिक-टिक घड़ियां गिनते,
एक-एक सब इसरोजन।

कण-कण से क्विंटल कर डाला,
तुम सबको *अजस्र* नमन।
भारत के कोने-कोने से,
आशीष मिले प्रबल, घनघोर।

भारत भावी भविष्य निर्भर,
तुम पर ही,
हे...!
जन गण मन।

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

व्यंग्य : पबजी-लव जी

-दिलीप कुमार
दो कथा संग्रह, एक उपन्यास प्रकाशित, रेडियो, टीवी, सिनेमा हेतु भी लेखन। फ़िलहाल स्वंत्रत लेखन और सरकारी सेवा।
https://sahityacinemasetu.com/vyangya-pub-ji-love-ji

कारगिल युध्द के बाद भारत के अनमोल रत्न सचिन तेंदुलकर ने कहा था कि…
“जब देश की सीमा पर हमारे जवान पाकिस्तान से युद्ध लड़ रहे हों तो, ऐसे समय में पाकिस्तान से क्रिकेट खेलने का कोई मतलब नहीं है”। सीमा पर चल रहे उस वक्त की जंग के मद्देनजर सचिन की बात का देशवासियों ने पुरजोर समर्थन किया था। तब से अब तक पाकिस्तान, द्विपक्षीय सीरीज खेलने के लिये भारत से नाक रगड़ रहा है, ताकि आईपीएल में बरस रही अकूत दौलत के कुछ छींटे उनके मुल्क पर भी पड़ सकें। लेकिन तब से न तो भारत के प्रति पाकिस्तान की बदमाशी कम हुई है और न ही पाकिस्तान से क्रिकेट को लेकर सचिन तेंदुलकर की बात का इकबाल कम हुआ है इसीलिये पाकिस्तान से हमारे क्रिकेट के रिश्ते सामान्य नहीं हो पाए हैं। एक बार बात बिगड़ी तो फिर बिगड़ती ही चली गई। क्रिकेट के रिश्ते टूटे तो हर किस्म के रिश्ते बाघा और अटारी बॉर्डर वाले दोनों देशों के रिश्ते टूटते ही चले गए, यहां तक कि भारत ने टमाटर और इफरात पानी भी पाकिस्तान को देना बंद कर दिया। इनकी सुलह यूनाईटेड नेशन्स और यूएसए की पहल भी नहीं करवा पाई। लेकिन जो काम राजनयिक, राजनैतिक और कूटनीतिक स्तर से नहीं हो पाया वो इश्क ने कर दिखाया, वो भी एक गेमिंग एप के जरिये। तब सीमा पर हुए कारगिल युध्द के जरिये सचिन की बात देश में लाइमलाइट में आयी थी अब पबजी के खेल में हुई सचिन और सीमा के सम्पर्क और उसके बाद की घटनाओं से मीडिया ने आसमान सर पे उठा रखा है।
किसी शायर ने ऐसे ही हालातों पर बड़ी दिलफ़रेब बात कही है –
उसकी बेटी ने उठा रखी है दुनिया सिर पे
शुक्र है, अंगूर के कोई बेटा न हुआ

पाकिस्तान भी गजब मुल्क है, वो अपने बाशिंदों को रोटी, बिजली, पानी, सुरक्षा नहीं दे पाता लेकिन अगर उसका कोई बाशिंदा भागकर भारत आ जाये तो उस मुल्क के तमाम लोग नाक -भौं सिकोड़ रहे हैं कि कहीं भी जाते मगर भारत तो हर्गिज नहीं जाना था। अब बंदूक और नफरत पर पल रहे और आटे के लिये मारामारी कर रहे पाकिस्तानियों को कौन समझाए –
भूख न देखे जूठा भात
नींद न देखे टूटी-खाट
प्रेम न देखे जात-पात

क्योंकि भले ही पबजी के जरिये हुआ हो मगर “लव तो लव है जी” भारत में कुछ अति उत्साही सोशल मीडिया जीवी लोग खुश हैं कि उन्हें जैसे कोई “भौजी” मिल गई हो। लेकिन हद तो तब हो गयी जब सचिन-सीमा के मीडिया ट्रायल में पाकिस्तान के सिंध सूबे के डकैतों की भी इंट्री हो गयी। वैसे तो पाकिस्तान में डकैत और गधे इफरात में पाए जाते हैं। भारत में लोगों की समझ में ये नहीं आ रहा है कि ये डकैतनुमा गधे थे या गधेनुमा डकैत तो यूनियन आफ इंडिया को वीडियो जारी कर धमका रहे हैं कि “पाकिस्तान से भाग कर आई हुई लड़की को जबरदस्ती उसके देश वापस भेजो वरना वो पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर हमला करेंगे “। अरे सिंध के डकैतनुमा गधों, पाकिस्तान के पांचों सूबों में दिन-रात अल्पसंख्यकों पर हमले जारी हैं, इसमें नया क्या है जल्द ही पूरे पाकिस्तान से अल्पसंख्यक वैसे ही

ISSN: 2584-0819

नेस्तनाबूद हो जाएंगे जैसे अफगानिस्तान से हो गए। अब इन डकैतनुमा गधों को कौन समझाए कि इश्क किसी भी सीमा या सरहद को नहीं मानता, क्योंकि अगर ऐसा होता तो भारत में अपने-अपने फील्ड में शिखर छूने वाली महिलाएं रीना राय और सानिया मिर्जा पाकिस्तान के युवकों से क्यों विवाह करतीं?
कुछ डकैतनुमा गधे जो पाकिस्तान से वीडियो बनाकर धमकी देते हुए रैंक रहे हैं वो सब कदाचित इस बात से अनभिज्ञ हैं कि भारत में नेपाल के रास्ते भागकर आई हुई महिला ने कहा है कि "उसे भारत में ही रहना है, भले ही ज़िंदगी जेल में बितानी पड़े, वो जीते जी हर्गिज पाकिस्तान वापस नहीं जाएगी क्योंकि मध्ययुग में जी रहे पाकिस्तान के लोग उसे पत्थरों से मार-मारकर उसकी जान ले लेंगे"।

सियासत के मोर्चे पर यही गनीमत रही कि पाकिस्तान के "नेशनल पप्पू" और "बदमाश शरीफ" ने इस घटना के बाबत अभी कोई स्टेटमेंट नहीं दिया है । मीडिया ने इसके अलावा चंद्रयान पर भी अभियान छेड़ रखा है । पाकिस्तान के यू टर्न खान कहे जाने वाले इमरान खान के पूर्व के एक विश्वस्त सहयोगी मगर जेल जाने के डर से उनसे अलग हो चुके "डब्बू" के उपनाम से मशहूर फवाद चौधरी भी इस मीडिया के सर्कस में अपनी सेवाएं दे रहे हैं, जो अपनी अक्लमंदी भरे बयानों और सेहत दोनों से काफी मोटे हैं। डब्बू हजरात उस मुल्क के साइंस और टेक्नोलॉजी मिनिस्टर भी रह चुके हैं। जहाँ दुनिया ने भारत के चंद्रयान अभियान को मानवता के इतिहास का "मील का पत्थर" माना है, वहीं पाक के एक्स मिनिस्टर डब्बू ने भारत के चंद्रयान की अभूतपूर्व कामयाबी को मामूली मानते हुए एक दानिशमंद बयान जारी किया है "जब जमीन से ही हमें चांद दिखता है तो चांद पर चंद्रयान भेजने की जरूरत ही क्या है"?

वाह रे डब्बू, सदके जावां तेरी अहमकाना दानिशमंदी पर, इन डब्बू हजरात की अक्ल को "वण्डर ऑफ द वर्ल्ड" करार दिया जाना चाहिये। ये वही दानिशमंद हजरात हैं जिन्होंने पाकिस्तान के साइंस और टेक्नोलॉजी मिनिस्टर रहते हुए बयान दिया था कि "अगर आपके घर के छोटे बच्चे मिट्टी खाते हैं तो उन्हें मिट्टी के बजाय सीमेंट फरहाम कराएं ताकि वो आगे चलकर जांबाज पाकिस्तानी बाशिंदे बन सकें"।
पाकिस्तान वाकई बतौर मुल्क एक केस स्टडी है। पहले पाकिस्तान में नारा लगता था "पाकिस्तान जिंदाबाद" अब पाकिस्तानी नारा लगाते हैं "पाकिस्तान से जिंदा भाग " यानी पाकिस्तान से अगर ज़िंदा भाग सकते हो तो भागो, क्योंकि पाकिस्तान में रहोगे तो या तो आटे की लाइन में भगदड़ से मरोगे और कहीं बच गए तो कोई भी किसी को कोई धार्मिक अवमानना का आरोप लगा कर मार देगा । एक मशहूर पाकिस्तानी शायर ने तो पाकिस्तान के हालात पर कहा था
न जाने कौन किसका कत्ल कर दे काफ़िर कहकर,
शहर का शहर मुसलमान बना फिरता है...

आटे की लाइन और पत्थरबाजी से हुई मौत से ही हर पाकिस्तानी सुबह खुद को नसीहत देता है "पाकिस्तान से जिंदा भाग " बाकी सब पब जी, लव जी औऱ भौजी वगैरह तो ज़िंदा बचे रहने के लतीफे हैं, क्योंकि आम पाकिस्तानी के लिये तो –
ज़िंदगी से बड़ी कुछ सजा ही नहीं
और जुर्म क्या है कुछ पता ही नहीं।... ... ...

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

कविता : सिसकते किताबों के पन्ने

-तुषार पुष्पदीप सूर्यवंशी
डीएम फैलो, नंदुरबार, महाराष्ट्र। कविता के लेखक, कवि, शाहीर, गीतकार।
https://sahityacinemasetu.com/poem-siskate-kitabon-ke-panne/

किसी किताबख़ाने में जाओगे आप कभी,
तो हर क़िताब को अच्छे से झांककर देख लेना,
हा, सिर्फ मेरी ही नही होगी हर किताब मौजूद किताबो में,
पर बिल्कुल किसीने मेरी तरह मोड़ के रखे होंगे किताबो के पन्ने,
जैसे कोई अपनी खुशियों को समेटकर रख देता है,
किसी संदूक में, कांच की शीशी में,
शहर के कोने में, फिल्मों के गानों में,
किसी कवि की कविताओ में और सिसकियां लेते अफसानों में...

अगर किसी किताब का पहला ही पन्ना,
मोड़ा हुआ मिल जाए तो याद कर लेना उस दिन को,
जिस दिन हम पहली बार मिले थे,
और उस वक्त मैंने आपको कविता सुनाई होगी,
और सुनो ना,
किताब का आखरी पन्ना,
बेहद ही दर्दभरा हो सकता हैं,
उसको हो सके तो देखना ही मत,
बल्कि मुमकिन हो तो फिर से एक बार मोड़ देना उस किताब के पन्ने को,
और शुक्रिया अदा कर देना उस किसान का,
जिसने पेड़ पौधे लगाए और उससे काग़ज़ बनकर आया,

उस कागज़ पर में कविताएं लिखकर हमारे चंद लम्हे संभालकर रख पाया,
शुक्रिया अदा करना मेरे कवि मित्र पाश का जिसने,
टूटते हुए सपनों से संभालने का बल दिया,
यह कहकर की सबसे खतरनाक होता हैं हमारे सपनों का मर जाना,
और ख़ासकर आखरी शुक्रिया कबाड़ी वालों का करना मत भूलना,
जिन कबाड़ी वालों ने यह किताबे जलाने के बजाएं,
पानी में बहाने के बजाए,
बाजार में बेचने के बहाने तुम्हारे हाथ में थाम दी..!

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

लेख : दोस्ती

-परिवर्तनकरी कुशराज
हिन्दी और बुन्देली में लेख, कहानी, कविता, डायरी, निबंध और संस्मरण लेखन
https://sahityacinemasetu.com/lekh-dosti/

जिंदगी में दोस्ती बहुत जरुरी है। सच्ची दोस्ती जिन्दगी को बना देती है और कपटी दोस्ती बनी हुई जिन्दगी को मिटा देती है। आजकल सच्ची दोस्ती होना बड़ा मुश्किल हो गया है। सच्चे दोस्त बड़ी मुश्किल और बहुत देर से मिलते हैं। ये दोस्त बन तो जल्दी जाते हैं, लेकिन इनकी सच्चे होने की परख बहुत दिनों बाद होती है इसलिए मैं कहता हूँ कि सच्चे दोस्त बहुत देर से मिलते हैं। सच्चे और कपटी दोस्तों में से हमें ही सच्चे दोस्तों की परख करनी होती है। हम सच्चे दोस्तों की परख बहुत दिनों बाद करते हैं और उनके साथ रहने से परख जल्दी हो जाती है कि वो सच्चे हैं या कपटी।

दोस्त का मतलब है – जो आपके दोष यानि कमियाँ बताए। आज के समय में मुझे ये मतलब सही नहीं लगता क्योंकि आजकल कई ऐसे दोस्त भी होते हैं, जो आप में कमियाँ ही निकालते रहते हैं और आपको हतोत्साहित करते रहते हैं जबकि आप में कमियाँ नहीं होती हैं। वो आपसे ईर्ष्या करते हैं और आपसे जलते हैं। वो आपकी प्रगति को देखना नहीं चाहते इसलिए आपकी निंदा करते हैं।

कभी – कभी वो आपकी निंदा इस तरह करते हैं कि आपके सही और रचनात्मक कार्य को भी गलत ठहरा देते हैं। एक समय आपको भी अपने कार्य से नफ़रत होने लगती है। अपने कार्य से नफ़रत करना बिल्कुल गलत है। जब आप स्वयं से ही सहमत नहीं हो तो भला आप दूसरों से कैसे सहमत हो सकते हो। आप हमेशा स्वयं से सहमत रहिए और हमेशा ये मानकर काम कीजिए कि मैं जो कर रहा हूँ वो सही है और मैं सही हूँ। तभी आप सार्थक बन पाओगे और जिन्दगी में अच्छा कर पाओगे।

इस संदर्भ में मैं कहता हूँ –
“आपके बारे में दुनिया क्या बोलती है,
ये मायना नहीं करता।
आपकी अन्तर्रात्मा जो बोलती है,
वो मायना करता।। “

ऐसे दोस्त जो आपमें हर समय कमियाँ निकालते रहते हैं और आपके हर काम में दखल देते रहते हैं। आपको कोई भी काम आपके मन से नहीं करने देते हैं और अपनी सलाह देते हैं। वो कहते हैं कि इस काम को ऐसे करो जैसे मैं कह रहा हूँ। आपको ऐसे दोस्तों की कोई भी बात नहीं माननी चाहिए। इनसे दूरियाँ बनाना ही हितकर है। क्योंकि ये “मुँह में राम बगल में छुरी” नामक कहावत को चरितार्थ करते हैं। ऐसे दोस्त कपटी दोस्त कहलाते हैं। जो खुद तो कुछ नहीं करते और दूसरों को भी कार्य करने नहीं देना चाहते। ऐसे दोस्तों से सावधान रहिए। कपटी दोस्त आपको कई बार ठगते हैं और आपको धोखा देते हैं। कोई रचनात्मक कार्य आप करते हैं और वो उसका श्रेय खुद लेना चाहते हैं।
कभी-कभी वो आपको धमकाते भी हैं। उनसे कदापि मत डरिए। उनका साहस से सामना कीजिए। एक समय आपको पता चल जाता है कि इसने मुझे धोखा दिया है। तो उसी समय से उस धोखेबाज से दोस्ती तोड़ दीजिए। उससे जिंदगी में पुनः दोस्ती मत कीजिए, चाहे कुछ भी हो। इस संदर्भ में मैंने लिखा है –

ISSN: 2584-0819

"यदि आपका कोई मित्र धोखा देता है और मूर्ख बनाता है फिर भी आप उससे मित्रता किए रहते हैं तो ये आपकी सबसे बड़ी मूर्खता और जीवन की सबसे बड़ी भूल होगी।"

यदि कपटी दोस्त से दुश्मनी भी हो जाए तो चिंतित मत होईए। और ज्यादा खुश रहिए क्योंकि चाणक्यनीति में आचार्य चाणक्य ने कहा है –
"कामयाब होने के लिए अच्छे दोस्तों की आवश्यकता होती है और ज्यादा कामयाब होने के लिए अच्छे शत्रुओं की आवश्यकता होती है।"

ऐसे दोस्त जो आपके रचनात्मक कार्य की प्रसंशा करते हैं। यदि उस कार्य में कहीं सुधार की जरूरत होती है तो वे जरूरत पूरी करते हैं। वो हर समय आपको प्रोत्साहित करते रहते हैं और आपको पूरे मन से काम करने को कहते हैं। जो काम आप मन से करते हो, उसमें पूरी लगन और जोश लगा देते हो। ऐसे दोस्त आपको सलाह देते हैं परंतु उसे मानने के लिए बाध्य नहीं करते। वो जरा-जरा सी बात पर बुरा नहीं मानते। यदि मान भी जाते हैं तो उन्हें मना लेना चाहिए। ये आपके कार्य में सहयोगी बनते हैं और जरूरत पड़ने पर हर प्रकार से यानि तन, मन और धन से मदद करते हैं। वो आपकी खुशी को अपनी खुशी और दुःख को अपना दुःख समझते हैं। वो आपको अपने भाई – बहिन जैसा प्यार देते हैं। ऐसे दोस्त 'सच्चे दोस्त' कहलाते हैं।

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

लेख : भगोरिया पर्व

-संध्या शर्मा
साहित्य और सिनेमा लेखन में विशेष रुचि, बड़वानी (मध्य प्रदेश)
https://sahityacinemasetu.com/lekh-bhagoriya-parv/

"जंगलों में जब टेशु खिलता है। महुआ गदराता है। ताड़ी शबाब पर आती है। हवाओं में हल्की-हल्की रोमांच भरने वाली ऊष्मा भरने लगती है, तब फाल्गुन आता है और तब भगोरिया आता है।"

भगोरिया पर्व लोक संस्कृति के पारंपरिक लोकगीतों के माहौल में एक-एक संस्कृति का प्रतीक है, जो कई रंगों को अपने अंदर समेटे हुआ है। साथ ही प्रकृति और संस्कृति का संगम हरे-भरे पेड़ों से निखर जाता हैं। प्रकृति, संस्कृति, उमंग, उत्साह से भरा यह त्यौहार संस्कृति की गरिमा में वासंती छटा का एक ऐसा रंग भरता है कि देश से ही नहीं अपितु विदेशो से भी इस पर्व को देखने विदेशी लोग कई क्षेत्रों से आते है। इनके रहने और ठहरने के लिए प्रशासन द्वारा कैंप लगाए जाते है।

झाबुआ, बड़वानी, अलीराजपुर, खरगोन आदि जिलों के गावों में भगोरिया पर्व लोकगीतों एवं नृत्य से अपनी संस्कृति को विलुप्त होने से बचाते आ रहे हैं। इसका हमें गर्व करना चाहिए। यह फागुन माह में मालवा-निमाड़ क्षेत्रों के भिलो को यह प्रिय उत्सव है। भगोरिया पर्व की एक विशेष बात यह है कि इस पर्व में आदिवासी युवक-युवतियाँ को अपने जीवन साथी का चुनाव करने का मौका मिलता है। होलिका दहन से सात दिन पूर्व शुरू होने वाले इस भगोरिया पर्व में युवा वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं।

यह पर्व युवा वर्ग के आसपास ही केन्द्रित रहता है। इन दिनों इच्छा रहती कि खिड़की से चिपक कर बैठ जाएं व टेशू से भरे पेड़ो को अपनी आंखो में बसा ले। बस इसी मौसम में प्रेम का गंद आदिवासी समाज में निर्णायक बिंदु पर पहुंचता है। आदिवासी अपने साथियों को लेकर प्रेम पक्ष में चल पड़ता है। इसी माहौल में एक-दूसरे को चाहने लगते है। इस आदिवासी समाज का हल बना यह भगोरिया पर्व, जिसमें युवक-युवतियों को अपने जीवन साथी का चुनाव करने का अवसर मिलता है।

इन दिन अविवाहित युवक-युवतियाँ हाथ में गुलाल लेकर निकलते हैं। कोई युवक जब अपनी पसंद की युवती के माथे पर गुलाल लगा देता है और लडकी बदले में गुलाल लड़के के माथे पर लगा देती है, तो यह समझा जाता हैं कि दोनों एक-दूसरे को जीवन साथी बनाना चाहते हैं। पूर्व स्वीकृति की मोहर लग जाती हैं। जब लड़की-लड़के के हाथ से माजुन (गुड़ और भांग) खा लेती है, और यदि लड़की को रिश्ता मंजूर नहीं होता तो वह लड़के के माथे पर गुलाल नहीं लगाती हैं।

भगोरिया हाट के दिन क्षेत्र भर के आसपास के गावों के किसान, भिल आदिवासी सज-धज कर तीर तलवार लेकर हाट वाले गाव में पहुंचते हैं। वहां मैदान में वे लोग डेरा लगाते हैं। हाट के दिन बुजुर्ग डेरो में रहते हैं, लेकिन अविवाहित युवक-युवतियाँ हाथ में गुलाल लेकर निकल जाते है। भगोरिया पर्व का बढ़े-बूढ़े सभी आंनद लेते है। भगोरिया हाट में प्रशासन की भी व्यवस्था रहती हैं। हाट में जगह-जगह ढोल की थाप और मांदल की गूंज सुनाई देती है और बासुरी, घुंघुरुओ की ध्वनि सुनाई देती हैं। यह दृश्य में। एक अलग चुम्बकीय आकर्षण का माहौल पैदा करता है जो संस्कृति की अलग छाप छोड़ता है।

ISSN: 2584-0819

ढ़ोल वजन में भारी तथा काफी बड़ा होता है जिसे बजाने में महारत हासिल हो वही नृत्य के घेरे के मध्य में खड़ा होकर बजाता है। भगोरिया पर्व पर उपयुक्त स्थान पर जहां हाट लगता है। वहां पर ज्यादा संख्या में खाने पीने की चीजों की दुकानें, खिलौने, चूड़ियाँ, बिंदिया की दुकानें देखने को मिलती हैं। छाव की बेहतर व्यवस्था होती है। पीने के पानी की सुविधा, झूले आदि की अनिवार्यता को पंचायत द्वारा लगाने की व्यवस्था होती हैं। ताकि मनोरंजन के साथ लोक संस्कृति का भी आनंद ले सके। इसमें व्यापारी अपने – अपने ढंग से खाने की चीजें गुड़ की जलेबी, भजिए, खारिए (सेव), हार, कंगन (शक्कर के बने हुए), पान, कुल्फी, केले, संतरा, ताड़ी बेचते हैं। साथ में झूले वाले, गोंदने वाले (टैटू) अपने व्यवसाय करने में जुट जाते हैं।

सभी लोग ट्रक, बैलगाड़ी दुपहिया वाहन पर दूर गांव के रहने वाले लोग इस हाट (भगोरिया) में सज धज के जाते है। कई नौजवान युवक-युवतियाँ झुंड बनाकर पैदल भी जाते है। भगोरिया पर्व में एक से रंग की वेश-भूषा, नख से शिखर तक पहने वाले चांदी के आभूषण, पावों में घुंघरू, हाथो में रंगीन रुमाल लिए गोल घेरा बनाकर ढोल, मांदल की थाप पर बेहद सुंदर नृत्य करते हैं।

भगोरिया के दिन सुबह से शाम तक ढोल-मांदल की थाप और थाली की खनक पर आदिवासी कुरार्टे की आवाज गूंजती रहती हैं। भगोरिया की शुरुआत के साथ ही लोक संस्कृति अपने पूर्ण रूप में गुलजार होती हुई नजर आती हैं। ढ़ोल मांदल की धुन, थाली की खनक पर पेंट-शर्ट पहने और काला चश्मा लगाए युवा और साड़ी पहनी युवतियाँ जबरदस्त नृत्य करती है। दिन के चढ़ने के साथ ही भगोरिया की मस्ती परवान चढ़ती है। युवक-युवतियाँ पान खिलाते नजर आते है, तो कही युवतियाँ खुद ही पान खरीदती हुई दिखाई देती हैं।

बच्चे झूले, चकरी का जमकर लुफ्त उठाते है, तो इसमें बड़े भी नजर आते है। युवाओं के पहनावे पर अब लोक संस्कृति के साथ आज की फैशन का भी रंग चढ़ते हुए दिखाई देता है, तो सेल्फी लेते हुए भी दिखाई देते हैं। कई युवक-युवतियों की अल्हड़ मस्ती और कुरार्ट से लगता है । मानो अब भी उन्होंने परम्परा को बिसराय नहीं है।

निमाड़ में आदिवासियों के भगोरिया पर्व की धूम शुरू हो गई। सोमवार को पहले दिन सज-धजकर मेले में पहुंची। पारंपरिक मांदल ढोल पर सभी ने खूब आंनद उठाया, तो कही यह आदिवासी परंपरा से भरा रहने वाला प्रणय पर्व इस बार बहुत फिका था।

कोरोना के बीच हो रहे इस मेले में मास्क और सोशल डस्टेंसिंग गायब थी। इसको लेकर पुलिस और प्रशासन के अधिकारी भी लापरवाह नजर आए, तो कही पर हाट बाजार में मनोरंजन के साधन तो नजर आए लेकिन एक भी मांदल नजर नहीं आईं। वहीं कोरोना बीमारी के प्रति गम्भीरता नजर नहीं आई।
जनता अभी भी लापरवाही से बिना मास्क और सामाजिक दूरी को नजर अंदाज करती हुई स्वच्छंद विचरण करती नजर आ रही हैं। दुकानदार भी कोरोना गाइड लाइन का पालन करते नजर नहीं आ रहे।

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

लघुकथा : जानकी का घर

-आलोक कौशिक
स्नातकोत्तर (अंग्रेजी साहित्य), पत्रकारिता एवं स्वतंत्र लेखन, बेगूसराय (बिहार)
https://sahityacinemasetu.com/laghukatha-janki-ka-ghar/

कई वर्ष पश्चात दूरदर्शन पर धारावाहिक 'रामायण' के पुनः प्रसारण से कौशल्या देवी बहुत खुश थीं। सुबह के नौ बजते ही टेलीविजन के सामने हाथ जोड़ कर बैठ जाती थीं। आज रामायण देखते हुए वह अत्यंत भावविभोर हो रही थीं। सीता एवं लक्ष्मण को राम के संग वन जाते हुए देखकर कौशल्या देवी की आंखों से अश्रु प्रवाहित होने लगे। धारावाहिक रामायण के आज का एपिसोड समाप्त होने के पश्चात कौशल्या देवी अपने सूखे गले को तर करने के लिए अश्रुओं को आंचल से पोछते हुए रसोई घर में प्रवेश करती हैं। वहां की स्थिति देखकर वह आग बबूला हो उठती हैं और अपनी बहू को पुकारते हुए बहू के कमरे में घुस जाती हैं। जहां उनकी बहू जानकी एकाग्रचित्त होकर पढ़ रही होती है। अपनी बहू को पढ़ता हुआ देखकर कौशल्या देवी का क्रोध और बढ़ जाता है। "अच्छा, तो महारानी दूध उबलता हुआ छोड़कर यहां कलेक्टर बनने की तैयारी में लगी है। उधर सारा दूध उबल कर पूरे रसोई में फैल चुका है। अब कोई चाय भी कैसे पिएगा ?" दूध उबल कर गिर जाने की बात सुनते ही जानकी रसोई घर की तरफ भागती है। वहां पहुंचकर वह तुरंत रसोई की सफाई में लग जाती है। "इससे एक भी काम ठीक से नहीं होता है। बेहोश होकर सारा काम करती है।" रसोई की ओर आते हुए कौशल्या देवी ने कहा।

"मां जी, भूल हो गई। मैंने सोचा जब तक दूध गर्म होगा, तब तक थोड़ी पढ़ाई कर लेती हूं। वैसे भी पढ़ाई के लिए समय तो मिल ही नहीं पाता है। घर का काम निपटाना, फिर बच्चों को संभालना, इन्हीं सब चीजों से फुर्सत नहीं मिल पाती है।" जानकी ने सरलता से कहा। "काम नहीं करेगी तो क्या करेगी ? क्या तेरे बाप ने तेरे लिए यहां नौकर लगा रखे हैं ? बीए तो पास कर चुकी है। अब कितना पढ़ेगी ? तेरे पति को तो हम लोगों ने इतना पढ़ाया, लेकिन फिर भी अब तक वह सरकारी नौकरी नहीं ले पाया ? ज्यादा पढ़कर तू क्या कलेक्टर बन जाएगी ?" कौशल्या देवी ने क्रोधपूर्ण व्यंग्यात्मक लहजे में कहा।

"पढ़ाई तो ज्ञानार्जन के लिए किया जाता है एवं ज्ञान का सरकारी नौकरी से कोई विशेष संबंध नहीं है। फिर भी मेरे पति सरकारी नौकरी के लिए प्रयत्न तो कर ही रहे हैं। रावण द्वारा सीता का हरण कर लिए जाने के पश्चात प्रभु श्रीराम को भी सीता को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक प्रयत्न करने पड़े थे। इस कारण से प्रभु श्रीराम के ज्ञान रूपी सामर्थ्य पर संदेह तो नहीं कर सकते। श्रीराम के केवल एक बाण से तो रावण का भी वध नहीं हो सका था। किंतु इससे भगवान श्रीराम की शक्ति पर क्या कोई तनिक भी संदेह कर सकता है ?" जानकी ने अत्यंत सहजता से जवाब दिया।

जानकी की बातें सुनकर कौशल्या देवी अत्यंत क्रोधित हो उठीं और जानकी को धमकाते हुए कहने लगीं – "कल की जन्मी हुई छोकरी, तू मुझे रामायण का प्रवचन देती है। आज से तू मेरे और मेरे पति के लिए खाना नहीं बनाएगी। एक तो सारा दूध बर्बाद कर दी और ऊपर से मेरे घर में रहकर मुझसे ही ज़बान लड़ाती है। इतनी ही तकलीफ़ है यहां पर तुझे, तो छोड़ दे मेरा घर।"

कौशल्या देवी की बातें सुनकर जानकी सोचने लगी – "आख़िर माता सीता का घर कौन सा था – महाराजा जनक का महल, महाराजा दशरथ का महल, अशोक वाटिका अथवा पति के द्वारा परित्याग किए जाने के उपरांत वन में महर्षि वाल्मीकि जी की कुटिया।"

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

शोध आलेख : 'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में चित्रित नारी सशक्तीकरण

-सपना
पंजाब विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग में वरिष्ठ शोध फ़ेलो।
10 से अधिक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता तथा प्रपत्र-वाचन एवं विभिन्न पत्रिकाओं एवं संपादित पुस्तकों में विभिन्न विषयों पर शोधालेख प्रकाशित।
https://sahityacinemasetu.com/lekh-gadar-ki-chingariya-natak-sagrh-me-chitirit-nari-sashaktikaran/

नारी-सशक्तीकरण समय की आवाज़ भी है और माँग भी। इसे नारी-विमर्श का क्रियात्मक रूप कह सकते हैं। यह एक सामाजिक उपक्रम ही कहा जाएगा। कहीं-कहीं इसके लिए नारी सबलीकरण पद का भी प्रयोग होता है। इसका विशेष प्रयोग प्रशासनिक और राजनीतिक क्षेत्रों में नज़र आता है। हर साल विभिन्न सम्मेलनों, गोष्ठियों में 'नारी-सशक्तीकरण' का विषय विशेष मुद्दा बना रहता है। देश के अनेक सरकारी एवं ग़ैर-सरकारी; दोनों ही स्तरों पर महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में अनेक योजनाएँ और नीतियाँ बनीं हैं, परन्तु प्रश्न यह उठता है कि नारी-सशक्तीकरण के अंतर्गत नारी की किन विशिष्टताओं को विकसित किया जाना चाहिए। इसके लिए 'औरत को आज़ादी बाहर से नहीं, अपने भीतर से खोजनी चाहिए।' कहा भी गया है कि अंतरंग और बहिरंग में अंतरंग शक्ति अधिक बलवान् है। कुमुद शर्मा ने भी नारी की आंतरिक शक्ति के विकास पर ज़ोर दिया है। उनके अनुसार-"महिला-सशक्तीकरण का अभिप्राय महिलाओं में आंतरिक शक्ति का विकास कर, उनमें आत्मविश्वास जगाना, उनकी क्षमताओं और विलक्षणताओं का प्रकाशन करना तथा उन्हें राष्ट्र के संवर्द्धन से जोड़ना है।"1 स्त्री की व्यक्तिगत दुर्बल स्थिति का कारण परिवेशगत ही है। परम्पराओं, धार्मिक-सांस्कृतिक विश्वासों, क़ानूनी प्रावधानों, पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण, बिगड़ी क़ानून-व्यवस्था आदि के कारण, स्त्री की हैसियत दोयम दर्ज़े की और असहायता से भरी बनती चली गयी है। विभिन्न तरीक़ों से उसे इस हालत से निकाल कर बराबरी की सबलता दिलवाना; विशेषकर सामाजिक मान्यताओं में तब्दीली करते हुए, इसी का नाम नारी-सशक्तीकरण है। कुल मिला कर यह राज्य या केन्द्र सरकार की सामाजिक नीति का मामला है। तथापि, इसमें व्यक्तिगत प्रयासों को भी शामिल किया जा सकता है। कई उदाहरण सामने आते रहते हैं, जहाँ से पता चलता है कि कैसे विपरीत परिस्थितियों के बावजूद, अनेक स्त्रियों ने ख़ुद को सबल किया और जीवन की जंग जीती। नारी-सशक्तीकरण की दिशा में महिला रचनाकारों द्वारा रचित साहित्य ने महत् भूमिका निभाई है। महिला रचनाकारों द्वारा सृजित स्त्री, "पारंपरिक वर्जनाओं, अमानुषिकताओं और विषमताओं को नेस्तानाबूद कर डालने को आमादा और प्रतिबद्ध है। यह स्त्री विचार, कल्पना और संवेदना के स्तर पर कितने ही रेशमी सपनों को बुनकर एक नितांत मानवीय संसार को रचती है, व्यवस्थात्मक अवरोधों के भीतर छिपी विषमताओं को अनावृत्त कर मधुर संबंधों की पुनर्रचना करती है। जहाँ वह मादा नहीं सिर्फ़ एक इंसान है और अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए भीतर की सृष्टि के रहस्यों को चीन्हें में समर्थ है।"2

नारी-सशक्तीकरण का मुख्य अर्थ कई बार आर्थिक सशक्तीकरण से ले लिया जाता है। आर्थिक सशक्तीकरण महत्त्वपूर्ण है, लेकिन वास्तविकता में, नारी सशक्तीकरण का अभिप्राय उसके सम्पूर्ण सशक्तीकरण से है। मृदुला गर्ग नारी-सशक्तीकरण के संबंध में लिखती हैं कि-"सशक्तीकरण का अर्थ है

ISSN: 2584-0819

मानस को सशक्त करना, चेतना, प्रज्ञा, अस्मिता को सशक्त करना।"3 अर्थात् यहाँ इस बात का उल्लेख भी आवश्यक है कि नारी-सशक्तीकरण का एक बड़ा पक्ष निर्णय लेने वाले पदों या संस्थाओं में उसका चुनाव और भागीदारी सुनिश्चित करना भी है। इसी कारण हाल के वर्षों में नौकरियों और पंचायत से लेकर संसद तक उसके उचित स्थान के लिए आरक्षण के प्रावधानों पर बात होती रही है। चूँकि घर-गृहस्थी की बड़ी ज़िम्मेदारी अभी भी उस पर है, इसलिए साफ़ पानी, रसोई गैस की उपलब्धता और शौचालय के निर्माण को भी नारी-सशक्तीकरण के उपाय के रूप में देखा जाना चाहिए। नारियों द्वारा संचालित पुलिस थाने, सशक्त बलों में उनकी नियुक्ति, पुरुषों के बराबर मज़दूरी, मातृत्व अवकाश, प्रसूति लाभ, रात की पालियों में काम करने के लिए आवश्यक सुविधाओं का निर्माण अथवा विपदा में पड़ी नारी के लिए हेल्पलाइन आदि की रचना भी नारी-सशक्तीकरण है।

शिक्षा के विभिन्न रूपों में नारी के प्रति पूर्वाग्रहों को नष्ट करने की दिशा में उठाये गयेक़दम भी इसी श्रेणी में आएँगे। "सत्तर और अस्सी की दशक में भारत नारी-सशक्तीकरण की दिशा में चलाये जा रहे प्रयासों की एक बड़ी चिंता यह होती थी कि लड़कियों की शादी जल्दी कर दी जाती है, जिससे उनकी पढ़ाई अधूरी रह जाती है। पर केवल स्कूली पढ़ाई के बूते सामाजिक और आर्थिक प्रगति संभव नहीं थी। इसलिए यह ज़रूरत महसूस की गयी कि उन्हें व्यावसायिक शिक्षा की ओर भी ध्यान देना होगा। नब्बे के अंत तक आते भारत में उच्च शिक्षा में लड़कियों का फीसद बढ़ने लगा। पर अब भी शादी एक सीमा-रेखा थी, जिसके बाद कुछ-न-कुछ तो बदलता ही था। शादी के बाद सिर्फ़ सामान्य मध्य वर्गीय परिवार की लड़कियाँ ही नहीं, बल्कि सिल्वर सक्रीन पर बोल्ड अभिनय करने वाली लड़कियाँ भी करिअर अधूरा छोड़ देती थीं। 2020 तक आते लड़कियाँ अब करिअर से किसी भी तरह का समझौता नहीं करना चाहतीं। वे इसके लिए सात समंदर पार के प्रस्ताव भी स्वीकार रही हैं और 'परिवार पहले' के आग्रह को भी छोड़ रही हैं।"4 कुल मिलाकर ऐसे सभी उपाय जिनसे स्त्री की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, क़ानूनी, सांस्कृतिक आदि स्थिति मज़बूत होती हो, नारी-सशक्तीकरण है। इसे लेकर अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर न केवल बहुत सोचा विचारा गया है, बल्कि संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से बहुत से निर्णय लिये गये हैं और जिन्हें मानने के लिए राष्ट्र बाध्य हैं। नारी-सशक्तीकरण को लेकर भारत सरकार की अपनी नीतियाँ तो हैं ही, ये सब वैश्विक संधियाँ भी उसके सामने रहती हैं। इस प्रकार, नारी-सशक्तीकरण एक अन्तरराष्ट्रीय प्रयास है, जिसमें हर देश थोड़ा या ज़्यादा भागीदारी बन कर, मानव-इतिहास द्वारा नारी को कमज़ोर रखने के षड्यंत्र के परिणामों की सकारात्मक भरपाई करने की कोशिश कर रहा है। हिंदी लेखक भी इस प्रक्रिया में अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। इनमें शरद सिंह एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। इन्होंने अपने साहित्य में जहाँ नारी-संघर्ष को चित्रित किया है, वहीं उनकी लेखनी नारी-सशक्तीकरण के प्रति भी संवेदनशील रही है।

शरद सिंह द्वारा रचित नाटक-संग्रह 'गदर की चिनगारियाँ' में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने वाली तेरह वीरांगनाओं के संघर्ष और उनके सशक्त रूप को नाट्य-रूप में प्रस्तुत किया गया है। नाटक में चित्रित वीरांगनाओं के चारित्रिक विकास का प्रमुख आधार लोक-गीतों में चित्रित महिला पात्र हैं, जिनका इतिहास में तो कोई वर्णन नहीं मिलता, परंतु जिनकी उपस्थिति निर्विवादित है। विभिन्न क्षेत्रों के लोक–गीतों से इन पात्रों को एकत्र कर एक मंच पर नाटक के रूप में उपस्थित करना निसंदेह एक शोध-परक कार्य है। उनके नारी-पात्र युद्ध में जाने से भी पीछे नहीं हटते, बल्कि वे पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं; यथा, नाटक 'गदर की चिनगारियाँ' में राबिया के साथ उसकी सहेलियाँ जोहरा और नैना भी युद्ध में जाने के लिए तैयार दिखती हैं-

ISSN: 2584-0819

"राबिया : अरे जोहरा, ये जिरहबख्तर, ये ढाल, ये तलवार-तू सिपाही के लिबास में क्या कर रही है?
जोहरा : बेग़म हुजूर! आपने भी तो यही सब पहना हुआ है।
राबिया : हाँ, लेकिन मैं तो जंग के लिए कूच करने वाली हूँ.....मगर तुम.....
जोहरा : मैं भी आपके साथ जाने वाली हूँ।
राबिया : तुम? ये किसने कहा कि तुम मेरे साथ जाने वाली हो
जोहरा : मेरे दिल ने कहा....मैंने आपका साथ आज तक नहीं छोड़ा तो भला अब कैसे छोड़ूँगी? नहीं बेगम हुज़ूर, आप मुझसे यूँ पीछा नहीं छुड़ा सकती हैं, क़सम ख़ुदा की।
नैना : तो मैं कौन-सी पीछा छोड़ने वाली हूँ।"5

इसी प्रकार, 'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में संकलित नाटक 'बेगम जीनत महल' की नायिका बेगम जीनत महल और उनके शौहर बहादुर शाह जफ़र अपने ही महल के गद्दार दरबारी के कारण अंग्रेज़ों द्वारा कैद कर लिये जाते हैं। यहाँ तक कि उनके बेटों के कटे सिर अंग्रेज़ों द्वारा उन्हें तोहफ़े में दिये जाते हैं, ताकि यह सब देखने के बाद वे टूट जाएँ, पर बेगम जीनत महल ऐसे मुश्किल की घड़ी में न केवल ख़ुद को सम्भालती है, बल्कि अपने शौहर की बूढ़ी रगों में क्रांति की चिंगारी जलाती है और उन्हें अंग्रेज़ों से मुक़ाबला करने का साहस उनमें जगाती है-
"रजब अली : अब तोहफा तो तोहफा ही होता है, मालिक! एक बार नज़र तो डालिए!
जीनत महल : ठहरिए बादशाह सलामत! मुझे इन फिरंगियों का रत्ती भर यकीन नहीं है,तोहफे पर से रूमाल मैं हटाऊँगी!..... (सदमे भरी आवाज़ में) या अल्लाह! मेरे खुदा!....इस थाल में तो हमारे दो बेटों के कटे हुए सिर हैं!
बहादुर शाह जफर : क्या हम इसी काबिल थे कि अस्सी बरस की उम्र में अपने बेटों के कटे हुए सिर तोहफे में पाएँ! रहम कर मेरे खुदा! रहम कर!
जीनत महल : बादशाह सलामत, हौसला रखिए! आज दिल्ली की गलियों में जिनका लहू बह रहा है, वे सभी हमारी अपनी औलाद की मानिंद हैं....हमें अगर सोग करना है तो उनका भी करें!.....लेकिन नहीं, सोग कैसा? हमारे बच्चे आज़ादी के लिए कुर्बान हुए हैं....खुदा के वास्ते, रहम का लफ्ज इन फिरंगियों और उनके तलवे चाटनेवालों के सामने न निकालिए!" 6

'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में समाहित 'रानी अवंतीबाई लोधी'नाटक की नायिका रानी अवंतीबाई लोधी ने अपने पति लक्ष्मण सिंह के मृत्यु के बाद न केवल अपने राज्य को सम्भाला, बल्कि अंग्रेज़ों से देश को आज़ाद कराने की लड़ाई में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है-
"अवंतीबाई : (ऊँची आवाज़ में सैनिकों को संबोधित करती हुई) मेरे देशभक्त साथियों आज रामगढ़ को आपकी वीरता की, आपकी तलवार की धार की आवश्यकता है.... आज यह निर्णय करने का समय आ गया है कि हमें अपनी स्वतंत्रता चाहिए या अग्रेंजों की गुलामी चाहिए... ये निर्णय आपका साहस और आपके अस्त्र-शस्त्र करेंगे! क्या आप फिरंगियों के बुरे इरादों को सफल होने देंगे?
सैनिक : (समूहस्वर में) नहीं, कभी नहीं!
अवंतीबाई : (ऊँची आवाज़ में).....तो आज हम इन फिरंगियों को बता दें कि वे हमें कमज़ोर समझने की भूल न करें।.....याद रखिए कि हमें इन फिरंगियों को सिर्फ़ रामगढ़ से ही नहीं, हिंदुस्तान से भी निकाल फेंकना है....हम आज़ाद हैं और आज़ाद रहेंगे।
सैनिक : (समूहस्वर में) हाँ-हाँ, हम आज़ाद हैं और आज़ाद रहेंगे!" 7

ISSN: 2584-0819

'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में संगृहीत नाटक 'झलकारीबाई'की नायिका झलकारीबाई ने छोटी-सी आयु में निडरता से डाकुओं को भागने पर मज़बूर कर दिया था और आगे चलकर 1857 के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम में अपना महत्त्वपूर्ण बलिदान दिया-

"झलकारी : मुखिया चाचा हमेशा हमारी मदद करते हैं तो हमें भी उनकी मदद करनी चाहिए....माँ मुझे जाने क्यों नहीं देती हैं? किसी की प्राणों की रक्षा करने के लिए माँ की आज्ञा न मानने से कोई बड़ा पाप नहीं लगेगा....हाँ यही ठीक रहेगा!

झलकारी : मुखिया चाचा, मैं आ रही हूँ!

डाकू एक : हाय! ये मुझे लाठी किसने मारी!

डाकू सरदार : कौन है जो मेरे आदमियों को लाठी से मार रह है, किसकी इतनी मजाल! हिम्मत है तो मेरे सामने आ! अँधेरे में छिपकर क्या वार करता है!

झलकारी : मुझमें तो बहुत हिम्मत है...हिम्मत तो अब तेरी देखनी है... ये ले!

डाकू : (आश्चर्य से) हैं? ये तो एक लड़की है!....बाप रे! मर गया! भागो!" 8

'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में प्रस्तुत 'लक्ष्मीबाई' नाटक की नायिका लक्ष्मीबाई अंग्रेज़ों की कूटनीति से अच्छे से वाकिफ़ थी और वह समझ गयी थी कि उन्हें उनकी ही भाषा में ज़वाब देना होगा। उन्होंने दुर्गावाहिनी नाम से औरतों की एक टोली बनाई, उन्हें अस्त्र-शस्त्र चलाने की कला सिखायी ताकि वक्त आने पर वे अंग्रेज़ों से लोहा लेने में पीछे न हटें। उन्होंने न केवल औरतों को आत्मरक्षा का पाठ पढ़ाया, बल्कि देश को आज़ाद कराने में अपनी अहम भूमिका भी निभायी। आज भी उनकी वीरता और साहस को आदर्श के साथ याद किया जाता है और हमेशा याद किया जाता रहेगा-

"लक्ष्मीबाई : झलकारी, गवर्नर जनरल दामोदर राव को मेरा दत्तक पुत्र मानने को तैयार नहीं हैं और वे चाहते हैं कि मैं झाँसी मेजर एलिस को सौंप दूँ!

झलकारी : ये नहीं हो सकता है, महारानी जू! झाँसी राज्य अंग्रेज़ों का ग़ुलाम कभी नहीं बनेगा!

लक्ष्मीबाई : हाँ, यही संदेश मैंने गवर्नर जनरल के पास भेजा है, किंतु मुझे शंका है कि युद्ध की स्थिति बनकर रहेगी!

झलकारी : तो हम भी उन फिरंगियों को छठी का दूध याद करा देंगे!....दुर्गावाहिनी सेना सदैव सेवा में हाज़िर है, महारानी जू! अब तक उसमें सैकड़ों बहनें उसमें भर्ती हो चुकी हैं। सभी अस्त्र-शस्त्र चलाने में पारंगत हो चुकी हैं।

लक्ष्मीबाई : बहुत बढ़िया! स्त्रियों को शस्त्र चलाने का ज्ञान होना ही चाहिए,ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे न केवल आत्मरक्षा कर सकें बल्कि शत्रुओं के दाँत खट्टे कर सकें।"9

'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में संकलित 'ऊदा देवी पासी' नाटक की नायिका ऊदा देवी पासी का भले ही सामान्य परिवार में जन्म हुआ हो, परन्तु उनके हृदय में भी आज़ादी की वही चिनगारी थी, जो 1857 की क्रांति में महलों की रानियों के हृदय में जल रही थी। ऊदा देवी पासी ने अपनी टोली के साथ मिलकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी और अपनी टोली की सभी साथियों का दुश्मनों के हाथों एक-एक कर सबको मार दिए जाने पर भी ख़ुद पीछे नहीं हटी और अपने जीवन के अंतिम साँस तक अंग्रेज़ों से लड़ती रही। उनकी यही वीरता और साहस नारी-सशक्तिकरण के रूप को सबके सामने चित्रित करता है-

"ऊदा देवी : (ऊँची आवाज़ में आह्वान करती हुई) बहनों!.....फिरंगियों को भी पता चल जाए कि हिंदुस्तानी औरतों के जिन हाथों में मेंहदी सजती है और चूड़ियाँ खनकती हैं, वे हाथ बंदूक थामकर गोलियों की बरसात भी कर सकते हैं....तो बहनों तैयार रहो!....दुश्मन सिकंदर बाग की ओर बढ़ रहे हैं...उन्हें सबक सिखाना ही होगा!

ISSN: 2584-0819

औरतों का सामूहिक स्वर : हाँ-हाँ सबक सिखाना होगा!
नैना : तुम ही हम औरतों की प्रेरणा हो…तुम्हें कुछ नहीं होना चाहिए….जो कहीं तुम्हें कुछ हो गया तो हम सबकी हिम्मत टूट जाएगी…
ऊदा देवी : अच्छा, अच्छा, ये रोने-धोने का समय नहीं है…चलो जाओ अपना-अपना मोर्चा सम्हालो!…..ग़ुलामी की जिंदगी से आज़ादी के नाम पर मरना कहीं ज्यादा अच्छा है…..।"10
'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में संकलित 'महारानी तपस्विनी' नाटक की नायिका सुनंदा (तपस्विनी) के पिता पेशवा नारायणराव अंग्रेज़ी शासन की गुलामी को उतार फेंकना और अपने देश को आज़ाद करना चाहते थे, पर वह अपनी बेटी को लेकर भी चिन्तित थे। जब यह बात उन्होंने अपनी बेटी को बतायी, तो सुनंदा ने उनको अपने कर्त्तव्य-पालन के लिए प्रोत्साहित किया और अपने पिता को अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ाई में भेज दिया, क्योंकि वह ख़ुद भी अपने देश को आज़ाद होते हुए देखना चाहती थी-
"नारायणराव : लार्ड डलहौजी ने तो भारतीय रियासतों को हड़पने के लिए 'हड़प नीति' ही बना रखी है…वह भारत की हर रियासत को हड़प जाना चाहता है।
सुनंदा : हमें इस अन्याय का प्रतिकार करना चाहिए, पिता जी!
नारायणराव : प्रतिकार करना ही होगा, सुनंदा!…किंतु इस प्रतिकार का अर्थ होगा युद्ध!
सुनंदा : युद्ध से भय कैसा, पिता जी! 'गीता' में श्रीकृष्ण ने भी कहा है कि सत्य की रक्षा के लिए यदि युद्ध करना पड़े तो अवश्य करना चाहिए!"11
'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में संग्रहीत 'अजीजनबाई' नाटक की नायिका अजीजनबाई पेशे से नर्तकी ज़रूर थी, परन्तुउसके मन में देशप्रेम का जज़्बा भरा था और वह अपने देश को आज़ाद कराने का सपना भी देखती थी।उसने अपनी जैसे औरतों के साथ मिलकर मस्तानी टोली भी बना रखी थी,ताकि वक्त आने पर दुश्मनों को सबक सिखा सके। जब उसे इस बात की जानकारी मिली कि उसके राज्य पर अंग्रेज़ों ने धावा बोल दिया है, तब वह भीअंग्रेज़ों से युद्ध करने के लिए अपनी टोली के साथ निकल पड़ी और पकड़े जाने पर भी अंग्रेज़ों के आगे झुकी नहीं, बल्कि अदम्य साहस के साथ उनको ललकारती रही-
"अजीजन : मस्तानी टोली की साथी बहनों! आज वो वक्त आ गया है जिसका हमें इंतजार था…..आज अंग्रेज़ों से हम खुल कर, आमने-सामने की टक्कर लेंगे।
जनरल हैवलाक : सिपाहियों! गिरफ़्तार कर लो इन सबको! देखो, एक भी बचकर जाने न पाए!
शेफर्ड : जरनल हैवलाक! यही है वो अजीजनबाई जिसने मस्तानी टोली बना रखी है।
जनरल हैवलाक : हूँ! ए ब्यूटीफुल क्रिमिनल।…वैसे अगर ये अपने अपराध की माफ़ी माँग ले तो मैं इसे माफ किए जाने की सिफारिश कर सकता हूँ!
अजीजन : (गरजकर)…गुनाह तो तुमने किया है जनरल! माफी तो तुम्हें माँगनी चाहिए, मुझे नहीं! दूसरे के वतन पर कब्ज़ा करने से बड़ा गुनाह और कोई हो ही नहीं सकता है…..तुम अगर माफी भी माँगों तो भी हिंदुस्तान का बच्चा-बच्चा भी तुम्हें माफ नहीं करेगा।"12
'गदर की चिनगारियाँ'नाटक-संग्रह में प्रस्तुत 'मामकौर बीवी' नाटक की नायिका मामकौर बीवी जो निम्न-मध्यवर्गीय परिवार से संबंध रखती थी, जिसे न तो राजनीति का ज्ञान था और न ही किसी सम्मान या प्रतिष्ठा मिलने की लालसा। उसकी तो बस एक ही इच्छा थी अपने देश को अंग्रेज़ों के चँगुल से मुक्त कराने की, जिसके लिए मामकौर बीवी ने अपनी सहेलियों के साथ मिलकर एक टोली बनायी और अंग्रेज़ों को देश से बाहर निकालने के लिए बहादुरी से लड़ाई लड़ी और अंत में हँसते-हँसते फाँसी के फंदे पर भी झूल गयी-
"मामकौर : बहनों! क्या आप लोगों को फिरंगियों का राज पसंद है?
औरतों का सामूहिक स्वर : नहीं! बिलकुल नहीं!

ISSN: 2584-0819

मामकौर : तो हम उन्हें राज क्यों करने दे रहे हैं? क्या हम डरती हैं?
औरतों का सामूहिक स्वर : नहीं! हम किसी से नहीं डरती हैं!
मामकौर : तो फिर देर किस बात की है? हमें सड़कों पर निकल पड़ना चाहिए और इन फिरंगियों को बता देना चाहिए कि हमारे जो हाथ चूड़ियाँ पहनते हैं वे जूतियाँ भी मार सकते हैं।"13

'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में संकलित 'मैनाबाई' नाटक की नायिका मैनाबाई ने अंग्रेज़ों की क्रूरता एवं नृशंसता को झेला, परन्तु फिर भी अपने स्वतंत्रता-प्रेमी क्रांतिकारी साथियों का भेद अंग्रेज़ों के आगे नहीं खोला। मैनाबाई का ऐसा अदम्य साहस उनके देशप्रेम और आज़ादी के प्रति उनके समर्पण भाव को प्रदर्शित करता है-

"कैप्टन रस्किन : तुम अगर हमें बागियों के राज़ नहीं बताओगी तो हम तुम्हें इतना टॉर्चर करेंगे कि तुम्हारी रूह भी काँप उठेगी!
मैना : तुम हमारी आत्मा को डरा नहीं सकते हो...जितना चाहे उतना प्रताड़ित कर लो!
कैप्टन रस्किन : सिपाही! इसे पेड़ से बाँधकर कोड़े मारो और अगर ये पानी माँगे तो एक बूंद पानी नहीं देना!
कुंती : मैना दीदी बेहोश हो गई हैं...बेहोशी में वे पानी माँग रही हैं...कोई उन्हें पानी दो!
कैप्टन रस्किन : खबरदार! कोई इसे पानी नहीं देगा!
कुंती : नहीं! ऐसा मत करो।
मैना:कुंती....न...हीं...इन...लो..गों से..रहम...की...भी..ख़ ...नहीं...माँगो...ये चाहे...कुछ..भी...कर..लें...लेकिन...मेरा मुँह..नहीं...खुलवा..स..क..ते...हैं...।"14

'गदर की चिनगारियाँ' नाटक-संग्रह में सम्मिलित 'रानी फूलकुँवर' नाटक की नायिका रानी फूलकुँवर के पति और बेटे को झूठे मुकद्दमे में फँसा कर तोप के मुँह से बाँधकर मौत के घाट उतार दिया गया था। इसके बावजूद भी रानी ने अपने-आपको कमज़ोर नहीं पड़ने दिया और अपने राज्य को अंग्रेज़ों की ग़ुलामी से मुक्त कराने के लिए उनके साथ युद्ध किया। जब उन्हें लगा की अब वह चारों ओर से घेर ली गयी हैं, उनका इस घेरे से निकलना नामुमकिन है, तब उन्होंने अपनी ही तलवार अपने पेट में मार दी, परन्तु जीते-जी अंग्रेज़ों के हाथ नहीं आयी। रानी फूलकुँवर का अपने राज्य और देश को आज़ाद कराने के लिए यूँ अंग्रेज़ों से भिड़ जाना उनकी वीरता एवं साहस को परिलक्षित करता है-

"फूलकुँवर : साथियो!.... ये अंग्रेज धीरे-धीरे पूरे हिंदोस्तान पर कब्ज़ा करते जा रहे हैं....हमें इन्हें रोकना होगा....और इन्हें रोकने का एकमात्र उपाय है युद्ध!....आज वह समय आ गया है जब हम अपने शत्रुओं को युद्ध के मैदान में ललकारें और उन्हें गाजर-मूली की भाँति काटकर रख दें!
सैनिकों का समूह स्वर : हर-हर महादेव
सार्जेंट स्मिथ : रानी तुम चारों ओर से घिर गई हो! तुम सरैंडर कर दो! वरना गिरफ़्तार कर ली जाओगी और अपने पति की तरह मारी जाओगी! तुम्हारी मदद करने वाले भी मारे जा चुकें हैं....
फूलकुँवर : मौत का डर किसे दिखा रहे हो, फिरंगी? हिंदुस्तानी मौत से नहीं डरते हैं...मौत में भी हम जिंदगी को देखते हैं....और तुम? तुम तो हमें न मौत दे सकते हो और न गिरफ़्तार कर सकते हो...ये देखो...(रानी अपने पेट में अपनी कटार मार लेती है)....आह....।"15

निष्कर्ष रूप में, कहा जा सकता है कि स्त्री-जीवन में संघर्ष से सशक्तीकरण तक के सफर से जुड़े विविध मुद्दों पर गहन विमर्श को चित्रित करती शरद सिंह की यह नाटक-संग्रह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कृति है। विवेच्य नाटक-संग्रह में संग्रहीत तेरह नाटक गदर की उन वीरांगनाओं के आत्मबलिदान, साहस, वीरता और सशक्त रूप को प्रस्तुत किया गया है। इन वीरांगनाओं के जीवन-संघर्षों को कई इतिहासकारों और

ISSN: 2584-0819

साहित्यकारों ने प्रकाश में लाने की भरपूर कोशिश भी की है, परंतु अभी भी सही मायने में इन वीरांगनाओं की वीरता की कहानियाँ इतिहास के पन्नों में दर्ज़ नहीं हो पाई है। यह नाटक-संग्रह हमारा ध्यान इसलिए भी आकृष्ट करती है, क्योंकि इनमें से कई वीरांगनाएँ ऐसी है जिनका नाम पाठक पहली बार सुनेंगे। सरल शब्दों में कहा जाए तो इन वीरांगनाओं उस समय स्त्री-शक्ति के ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए जो आज भी मन में कुछ कर गुजरने की इच्छा को जागृत कर देती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. शर्मा, कुमुद, 'आधी दुनिया का सच', नई दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, 2014, पृष्ठ संख्या-145
2. हरिनारायण (संपादक), कथादेश (पत्रिका), मृदुला गर्ग का लेख: सशक्तीकरण का स्त्रोत और आधार मस्तिष्क है, देह नहीं, दिल्ली, सहयात्रा प्रकाशन, अंक दिसम्बर 2008, पृष्ठ संख्या-78
3. जनसत्ता (समाचार पत्र), योगिता यादव लेख -वे बढ़ रहीं हैं मंजिल की ओर, रविवारीय अंक , दिल्ली, 08 मार्च 2020
4. सिंह, शरद, 'राबिया', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठसंख्या-66-67
5. सिंह, शरद, 'बेगम जीनत महल', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-82-83
6. सिंह, शरद, 'रानी अवंतीबाई लोधी', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-82-83
7. सिंह, शरद, 'झलकारीबाई', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-110-111
8. सिंह, शरद, 'लक्ष्मीबाई', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-135-136
9. सिंह, शरद, 'लक्ष्मीबाई', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-135-136
10. सिंह, शरद, 'ऊदा देवी पासी', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-158-159
11. सिंह, शरद, 'महारानी तपस्विनी', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-189
12. सिंह, शरद, 'अजीजनबाई ', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-178-179
13. सिंह, शरद, 'मामकौर बीवी', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-216-217
14. सिंह, शरद, 'मैनाबाई', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-261-262
15. सिंह, शरद, 'रानी फूलकुँवर', 'गदर की चिनगारियाँ', नयी दिल्ली, सस्ता साहित्य, 2011, पृष्ठ संख्या-104-105

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

लेख : अजीब समस्या है मेरे देश में

-रिचा सिंह चंदेल
बघेली कवयित्री, स्वतंत्र लेखिका, समाचार पत्रों में कहानी, कविता प्रकाशित
https://sahityacinemasetu.com/lekh-ajeeb-samasya-hai-mere-desh-mein

अजीब समस्या है मेरे देश में..खेलना, डांस करना, गाना गाना..सब कुछ पढ़ाई के बाद। भारतीय पहलवानों के साथ ऐसी घटनाएं बच्चों व उनके अभिभावकों पर प्रभाव तो जरूर डालने वाली है वैसे भी देश मे ज्यादातर अभिभावकों की यही सोच है कि खेल कूद सिर्फ स्कूल तक ही खेलना चाहिए। खेल में करियर नहीं है परिणाम भी सामान्यतः प्रत्येक अंतरराष्ट्रीय आयोजनों मे देखा जा सकता है। मुझे नहीं पता पहलवानों के आंदोलन में सच्चाई क्या है? यह सब न्यायालय तय करे किंतु इस बात में कोई शक नहीं है कि अगर भारत की कुल जनसंख्या मे 48% भागेदरी महिलाओं की है तो उसमें अधिक से अधिक 4% महिलाएं ही होंगी जिनके साथ सम्पूर्ण जीवन काल में किसी भी प्रकार की उत्पीड़न ना हुआ हो और जब बात खेल कूद की हो तो यह आँकड़ा और अधिक बढ़ जाता है। एक प्रोफ़ेसर के रूप में मैंने जितनी भी लड़कियों को पढ़ाया है उनमें से ज्यादातर ने इस बात पर सहमति जताई है उनके साथ कभी ना कभी परिवार के व्यक्ति, रिश्तेदार, गुरु अथवा कोच, सहयोगी या किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा शोषण किया गया है। कई बच्चियों ने तो खेलना छोड़कर ब्यूटी पार्लर, सिलाई या कोई अन्य कोर्स सीखना प्रारंभ कर दिया है मेरे लिए थोड़ा काष्टकारी है क्योंकि मै भी नहीं खेल पाई, अजीब लगता है यह देख कर कि जो लड़की कबबड्डी में एंकल पकड़ती थी आज उसके हाथ मे पार्लर के ब्रश है और जब व्यक्ति अपने गुण के अनुसार काम नहीं करता तो कहीं ना कहीं सफल होने की संभावना कम हो जाती हैं। सचिन अगर फुटबॉल खेलते तो शायद इतने बड़े खिलाड़ी नहीं होते।

जितने भी खिलाड़ियों (पुरुष या महिला) से मेरी बात हुई है, सब ने इस बात पर सहमति जताई है कि गंदगी नीचे से लेकर ऊपर तक है। बड़े स्तर पर थोड़ा कम हो सकती है पर छोटे स्तर पर यह बहुत ज्यादा है ऐसे में अभिभावकों के द्वारा बच्चियों कि सुरक्षा सबसे बड़ा मुद्दा बन जाता है। देश में पहले से ही शिक्षा व्यवस्था लाचार रही है, और ज्ञान को अंकों से या सरकारी नौकरी से ही मापा जाता है ऐसे मे वे अभिभावक वास्तव में बधाई के पात्र है जो अपने बच्चों की रुचि के अनुसार उन्हे कार्य करने देते है किन्तु यह आकड़ा बहुत कम है और जब इतने बड़े स्तर पर इस तरह की बात सामने आती है तो कही ना कही इसका नकारात्मक प्रभाव बच्चों और उनके अभिभावकों पर पड़ेगा।

ऐसा कौन सा क्षेत्र है जहां यह नहीं हो रहा? शिक्षा, व्यापार, चिकित्सा, रक्षा क्षेत्र या कहीं भी शोषण था और अभी भी हो रहा है। सुधार कैसे होना चाहिए या महत्त्वपूर्ण है, जरूरत है कि महिलाएं ही महिलाओं को समझें। खिलाड़ी महिला अपनी मां से भी कई बार ऐसी बातें नहीं कह पाती, कारण यह है कि उसका खेलना बंद कर दिया जाएगा। महिला ही महिला की ज्यादा बड़ी दुश्मन सदैव से रही है। पुरुषों मे जो दिखावा का भाव अब पर्याप्त रूप से दिख रहा है कि वे लड़कियों की इज्जत करते है वह सिर्फ दिखवा ना हो कर मन से होना चाहिए, राम के गाने कॉलर ट्यून मे लगा देने से या महाकाल गाड़ी मे लिखा लेने से कुछ नहीं होगा गुणों का अवतरण होना जरूरी है साथ ही हमें जरूरत है इस बात को समझने की कि महिलाओं का सशक्त होना आवश्यक है बुद्धि और बल दोनों से...

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

गदर : जब दर्शकों ने किया समीक्षकों का मुह बंद

-आशुतोष श्रीवास्तव
पीएच.डी. (हिंदी सिनेमा), एम.फिल.(फिल्म एंड थियेटर), एम.ए., बी.ए., बी.एड., यू.जी.सी नेट (हिंदी), सीटेट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एंड फ़िल्म प्रोडक्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, भारतीय एवं पाश्चात्य कला और सौंदर्यशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, साहित्य और सिनेमा लेखन में विशेष रुचि।
https://sahityacinemasetu.com/gadar-jab-darshakon-ne-kiya-samikshkon-ka-munh-band/

गदर पार्ट 1 को जब अधिकतर तथाकथित फ़िल्मी विद्वान समीक्षकों ने गटर बताया था, तब भी दर्शकों ने इस फ़िल्म को हिंदी सिनेमा के कालजयी फिल्मों के क्लब में शामिल कराकर उनका मुँह ऐसा बंद किया कि बेचारे वो करें तो करें क्या और बोलें तो बोलें क्या? खैर, पहली बात तो दोनों फिल्मों का कलेवर बिल्कुल अलग है। इसलिए दोनों फिल्मों की तुलना करना मेरे विचार से बिल्कुल ही गलत है। कारण दूसरे को नीचा दिखाकर खुद को अच्छा साबित करना अच्छी बात नहीं होती। दर्शकों के पास अब बहुत से ऑप्शन और संसाधन हैं, जिसके जरिये उन्हें पता है क्या करना है। कौन सी फ़िल्म देखनी है और कौन सी नहीं। दूसरी बात बॉलीवुड हमेशा से हीं अपने ज्ञान की सारी गंगा एक धर्म विशेष को हीं टारगेट करके बहाने क्यों निकलती है। अरे भाई सैक्स एडुकेशन देना हीं है तो आप अन्य दूसरे तरीके या दूसरे धर्म विशेष को भी तो लेकर दे सकते हैं। लेकिन बॉलीवुड अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने पर तुला हुआ है। एक बात और अगर OMG 2 फ़िल्म चल रही है तो 90% इसका पूरा श्रेय केवल और केवल पंकज त्रिपाठी हैं। बाकी तो केवल सैक्स जैसे विषय को भुनाने और सेंसरबोर्ड के कट से मिलने वाली पब्लिसिटी है। रही बात गदर पार्ट 2 की तो ये तस्वीर अपने आप में बहुत कुछ कह जाती है। ये सन्नी पाजी के ढाई किलो का हाथ के अलावा किसी और के बस की बात भी नहीं। उनकी इस पहचान को धूमिल मत कीजिये। जो तथाकथित विद्वान कहते हैं कि ये फिल्म लाउड है, इसमें बेवजह का शोर है तो वे शांति की अपील कर सकते हैं। मगर दर्शक सुनने का नाम हीं नहीं ले रहे हैं। जिन्हें श्रेया घोषाल पसंद हैं इससे उन्हें कोई ऐतराज नहीं लेकिन सुनिधि चौहान जिनकी पसंद हैं उन्हें कम से कम गाली तो मत दीजिये। कुल मिलाकर बात ये है कि गदर फिर से गदर मचाये हुए है और कालीन भैया अपना जलवा बनाये हुए हैं। दोनों फिल्में हिंदी सिनेमा के बॉक्स ऑफिस पर कई दिनों से पड़े अकाल को दूर करने में सफल साबित हों रही हैं। ये हिंदी सिनेमा के लिए शुभ संकेत है।
सिने प्रेमी के दिल से...

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

लेख : भाषाविज्ञान कला है या विज्ञान

-तेजप्रताप टंडन
पीएच.डी.शोधार्थी ।

https://sahityacinemasetu.com/article-bhashavigyan-kala-hai-ya-vigyan

भाषाविज्ञान पर विचार करते समय हमें यह ज्ञात होता है कि जिसमें भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए वही भाषाविज्ञान है तो स्पष्ट ही यह विज्ञान है। दरअसल विज्ञान शब्द का मूल अर्थ 'विशिष्ट ज्ञान' है। उपनिषदों में इसका प्रयोग 'ब्रह्मविद्या' के लिए भी हुआ है। आज सामान्य प्रयोग में शास्त्र और इसमें कोई भेद प्रायः नहीं पाया जाता है। यों मूलतः शास्त्र और विज्ञान में अंतर है, 'विज्ञान' तो 'विशेष ज्ञान' है और 'शास्त्र', 'शासन करने वाला' है अर्थात वह यह बतलाता है कि क्या कारणीय है और क्या अकारणीय। अपने यहां अर्थशास्त्र, कामशास्त्र,धर्मशास्त्र के प्राचीन प्रयोग इसी ओर संकेत करते हैं । इस अर्थ में व्याकरण को शास्त्र कह सकते हैं किंतु इस मूल अर्थ की दृष्टि से भाषा विज्ञान को शास्त्र नहीं कर सकते यह बात दूसरी है कि अब मूल अर्थ भुला दिया गया है और विज्ञान तथा शास्त्र पर्याय से हो गए हैं इसलिए राजनीतिक विज्ञान तथा राजनीति शास्त्र, भौतिक विज्ञान और भौतिक शास्त्र, सामाजिक विज्ञान और समाजशास्त्र, मानव विज्ञान और मानव शास्त्र एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

यहां यह प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि भाषाविज्ञान किस सीमा तक विज्ञान है। वस्तुतः विज्ञान का अर्थ आज के प्रयोग में केवल एक नहीं है गणित,भौतिक और रसायन जिस अर्थ में विज्ञान हैं, ठीक उसी अर्थ में मानव विज्ञान, राजनीति विज्ञान, समाज विज्ञान आदि विज्ञान नहीं हैं। विज्ञान में प्रायः विकल्प नहीं होता और उसके सत्य, जैसे अमुक कारण हो तो अमुक कार्य होगा। काफी सीमा तक देश काल से परे अर्थात सार्वत्रिक और सार्वकालिक होते हैं। वे बातें गणित या भौतिक पर जितनी लागू होती हैं उतनी राजनीति पर नहीं, फिर भी वह विज्ञान कहे जाते हैं। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि भाषा विज्ञान तो है किंतु उस सीमा तक नहीं जितना की गणित आदि। यद्दपि इसमें संदेह नहीं कि दिनोंदिन यह विकसित तथा अधिक वैज्ञानिक होता जा रहा है।

अब विज्ञान और कला का प्रश्न लेते हैं अध्ययन के विषयों को विज्ञान और कला दो वर्गों (वाणिज्य आदि के अतिरिक्त) में बांटा जाता रहा है। बीए. एमएस. आर्ट फैकल्टी में आर्ट्स (कला) का यही अर्थ है। वस्तुतः ज्ञान की इन दो शाखाओं के कारण ही यह प्रश्न उठा था कि 'भाषाविज्ञान' विज्ञान है या 'कला' यह बात ध्यान देने की है कि इस प्रश्न में कला का अर्थ 'ललित कला' या 'उपयोगी कला' नहीं है जैसा कि कुछ लोग ले लेते हैं इस प्रकार भाषाविज्ञान ललित कला या उपयोगी कला में कला का जो अर्थ है उस अर्थ में तो कला नहीं है किंतु बी ए. आदि में कला का जो विस्तृत है उस दृष्टि से कला है क्योंकि मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि ऐसे विषय जो रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र आदि की भांति निश्चित विज्ञान नहीं है, कला ही अंतर्गत माने जाते हैं।

भाषाविज्ञान भी लगभग इन्हीं की कोटि का है इस प्रसंग में यह भी उल्लेख है कि इस ग्रुप में कला का अर्थ क्षेत्र बहुत निश्चित नहीं है गणित को इस संदर्भ में कला में रखते भी हैं और नहीं भी रखते हैं कुछ विश्वविद्यालयों में बीएससी. पास व्यक्ति गणित में मास्टर की डिग्री ले तो उसे एमएससी. की उपाधि मिलती है और बीए.पास व्यक्ति डिग्री ले तो उसे एमए. की उपाधि मिलती है। यही नहीं यूरोप के कुछ विश्वविद्यालय सभी विषयों को साइंस मानकर साइंस की डिग्री देते हैं तथा कुछ परंपरागत रूप से सभी

ISSN: 2584-0819

आर्ट की। आजकल अध्ययन के विषयों को मोटे रूप से तीन वर्गों में रखने की परंपरा चल पड़ी है- प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी। प्राकृतिक विज्ञान में जहां

भौतिकी, रसायन आते हैं, सामाजिक विज्ञान में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र जाते हैं, मानविकी में साहित्य, संगीत शास्त्र और चित्रकला जुड़ जाते हैं। यदि भाषाविज्ञान को इनमें रखने की बात उठाई जाए तो वह समवेत रूप से सामाजिक विज्ञान के निकट पड़ेगा। यों यदि उसके विभिन्न विभागों की ओर दृष्टि बढ़ाएं तो उसकी ध्वनि विज्ञान शाखा विशेषतः ध्वनि के उच्चरित होने के बाद कान तक के संचरण का अध्ययन, प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में पड़ता है तो उसकी शैली विज्ञान शाखा एक सीमा तक मानविकी में।

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

लेख : भोजपुरी लोकगीत परम्परा में अगली कड़ी सोहर गीत

-डॉ. विकास चन्द्र मिश्र
स्वतंत्र लेखन, साहित्य एवं सिनेमा में गहरी रुचि, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश ।

https://sahityacinemasetu.com/lekh-sohar-song-sequel-in-bhojpuri-folk-song-tradition/

भोजपुरी भाषा-भाषी क्षेत्र अर्थात उत्तर प्रदेश में पूर्वांचल और बिहार के लगभग आधे हिस्से में तरह-तरह के गीतों का प्रचलन देखने को मिलता है, इन्हीं गीतों में से एक गीत सोहर भी है । कुछ लोग परिचित होंगे कि यह “जन्मोत्सव का गीत” है अर्थात “सोहर” गीत प्रतीक है कि या तो पुत्र का जन्म हो चुका है या फिर होने वाला है । विशेष रूप से यह गीत तभी गाया जाता है । इस गीत में गर्भधारण के पश्चात और जन्म के उत्सव तक की स्थितियों का वर्णन मिलता है । हमारे यहां परंपरा में यह देखने को मिलता है कि इसकी शुरुआत कहीं न कहीं श्री कृष्ण के जन्म के समय होती है ।

मथुरा में कृष्ण जी जनमले
बधाइयां बाजे गोकुला में हो ललना....
ए ललना नंद घर भइले गुलजार
अंगनवा होखे सोहर हो ।

और

मिलिजुली गावे के बधइया
बधइया गावे सोहर हो....
आज कृष्ण के होईहें जनमवा
जगत गाई सोहर हो ।

इस गीत में गांव जवार के आनंद का जो क्षण होता है, उसको भी रेखांकित किया गया है। जन्मोत्सव से जन-जन आह्लादित है ।

गीत देखिए....

गईया के गोबरा मंगाई ला
चउका लीपाई ला हो
मोरे बबुआ के होखे ला जनमवा
त सोहर गावेला हो ।

और फिर

सुख होला गउआं सगरिया
त गांव घर शहरिया न हो
मोरे बबुआ के भइल जनमवा
त सोहर गाई ल हो ।

ISSN: 2584-0819

यह गीत बालक के जन्म के उपरांत गाया जाता है । विशुद्ध रूप से इसे श्रृंगारपरक गीतों की श्रेणी में रखा जाता है । इस गीत में गर्भावस्था के दौरान पारिवारिक, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक चित्र देखने को मिलता है । स्त्रियों का नईहर प्रेम भी यदा कदा देखने को मिलता है जैसे...

पउआं बाटे भारी मोर
नईहरवा जाईब राजा जी
ससुरा में त रूज्जत नाई होई
मरी मरी जाईब ए राजा जी ।

गीतों द्वारा ही हम इस सोहर गीत की विषय वस्तु से परिचित होते हैं । इसे कहीं कहीं बधाइया भी कहा जाता है । ऐसा माना जाता है कि पुत्र के जन्म के उपरांत *नेग* लेने की जो परम्परा हमारे यहां मिलती है, उसका भी वर्णन देखने को मिलता है ...

जैसे...

बधाइयां लेबो कंगना...
बधाइयां लेबो कंगना ए मोरी भौजी ।
केतना ई दिनवा के मनसा ई पुरल
पूरन भईल सपना ए मोरी भौजी ।

जिस प्रकार श्री कृष्ण के जन्म पर जन्माष्टमी में सोहर गाया जाता है उसी प्रकार श्री राम के जन्म रामनवमी में भी सोहर गाया जाता है । सोहर भारतीय संस्कृति में एक संस्कार गीत है और यह गीत गर्भधारण से लेकर जन्मोत्सव तक की स्थितियों को अपने भीतर समेटे हुए हमारे सामने आता है ।
प्रसंग अत्यंत मार्मिक होते हैं और ननद, भौजाई और सास विभिन्न रिश्तो में यह गीत फलता और फूलता है। विषयगत विशेषता के आधार पर हम देख सकते हैं कि तमाम तरह के मार्मिक चित्रों का वर्णन इन गीतो में देखने को मिलता है । एक उदाहरण रखना चाहेंगे जो सोहर गीत परंपरा का एक प्रमुख उदाहरण है । बहुत प्रसिद्धि इस गीत को....।

जुग जुग जियसु ललनवा, भवनवा के भाग जागल हो
ललना लाल होइहे, कुलवा के दीपक मनवा में आस लागल हो॥
आज के दिनवा सुहावन, रतिया लुभावन हो
ललना दिदिया के होरिला जनमले, होरिलवा बडा सुन्दर हो॥
नकिया त हवे जैसे बाबुजी के, अंखिया ह माई के हो
ललन मुहवा ह चनवा सुरुजवा त सगरो अन्जोर भइले हो॥

इसी प्रकार राम जी के जन्मोत्सव पर भी इस गीत को गाए जाने की परम्परा मिलती है ....
कौशल्या के जन्मे ललनवा
अवध बाजे बजनवा हो 2
दशरथ के जन्मे ललनवा
अवध में बाजे बजनवा ।

ISSN: 2584-0819

स्त्रियों का यह मधुर गीत है जो उनके मानसिक और शारीरिक स्थितियों को भी व्यक्त करता है । इसमें अश्लीलता और शीलता का मिश्रण होता है । चूंकि यह भाषा एक बोली है और अपेक्षाकृत कम पढ़े लिखे लोगों की भाषा में है, इसलिए साहित्य में मर्यादा के पोषक इस पर अश्लीलता का आरोप भी लगा देते हैं , किन्तु यह स्थिति स्त्री के उस समय अर्थात गर्भावस्था के समय के शारीरिक और मानसिक स्थिति का वर्णन है…

फागुन मास सेजिया पर गइली
चईत देहिया भारी भईल हो....
ललना रहरी के दाल न घोटाला
त भात देखी हुली आवे ल हो ।

यह शारीरिक परिवर्तन भी गीतों का वर्ण्य विषय है। जन्मोत्सव के उपरांत माता – पिता, दादा – दादी के हर्ष का कोई ठिकाना नहीं होता ।खुशी से उपहार देने की उनकी दशा का वर्णन भी खूब मिलता है ।

लिहले जनम आज ललना
बधइया घर बाजे ला हो
ललना मंगल होखेला आंगन वा
सुहावन बड़ा लगेला हो ।

और

नन्द बाबा देवे धेनु गईया
लुटावे धन यशोदा मईया हो
जहवां घरे घरे बाजता बधाईया
महल उठे सोहर हो ।

इस प्रकार भोजपुरी की लोक गीत परम्परा में सोहर भी कजरी के समान मधुर गीत है। दोनों ही श्रृंगारिकता की पृष्ठभूमि में गाए जाते हैं । सावन की शुरुआत तो कजरी से होती है किन्तु इसकी समाप्ति भादो में सोहर से होती है।

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

ग़ज़ल : यहाँ की हवाओं में ज़हर घोलने वाले

-मुहम्मद आसिफ़ अली
स्वतन्त्र लेखन, न्यूज़ पेपरों एवं मैग्जीन्स में कविता, लघुकथा, कहानियां, आलेख ,साहित्य एवं सिनेमा में गहरी रुचि
https://sahityacinemasetu.com/ghazal-yaha-ki-hawaon-mein-zahar-gholne-wale/

यहाँ की हवाओं में ज़हर घोलने वाले।
तू गूंगा क्यों हो रहा है सब बोलने वाले॥

तेरे आँसू किसी के गम में क्यों निकलते नहीं।
तू क्यों रोता है सियासत के पर खोलने वाले॥

चैन की ज़िन्दगी थी एक, उसको भी छीन लिया।
इन्साफ के तराज़ू में नफरत को तोलने वाले॥

जहाँ भी जाएगा तू परेशान ही रहेगा आखिर।
चादर इंसान की सुन ले ओढ़ने वाले॥

एक दिन तेरा भी हिसाब होगा ज़िंदगी का।
मज़लूमों के घरों को बे-हिसाब तोड़ने वाले॥

अवाम के हाथों नीस्त-ओ-नाबूद हो जाएगा तू भी।
ताकत से अपनी लोगों के सर फोड़ने वाले॥

इस सब के बावजूद भी हम चिराग़ जलाएँगें।
हमें कहते हैं सब 'आसिफ' दिल जोड़ने वाले।।

साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

कहानी : ऐसा क्यों है?

-सुधीर श्रीवास्तव
संरक्षक : नव साहित्य परिवार, कहानियाँ, लघुकथाएँ, हाइकू, कविताएँ, लेख, परिचर्चा, पुस्तक समीक्षा आदि 250 से अधिक स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय स्तर की पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित, गोण्डा (उ.प्र.)
https://sahityacinemasetu.com/kahani-aisa-kyu-hai/

अभी मैं सोकर उठा भी नहीं था कि मोबाइल की बज रही लगातार घंटी ने मुझे जगा दिया।
मैंने रिसीव किया और उनींदी आवाज़ में पूछा -कौन?
उधर से आवाज आई -अबे! अब तू भी परेशान करेगा क्या? कर ले बेटा
ओह! मधुर , क्या हुआ यार?
कुछ नहीं यार! बस थोड़ा ज्यादा ही उलझ गया हूँ,
सोचा तुझसे बात कर शायद कुछ हल्का हो जाऊं।
बोल न ऐसी क्या बात हो गई?
मैं तेरे पास थोड़ी देर में आता हूं, फिर बताता हूं। मधुर ने जवाब देते हुए फोन काट दिया।
मैं भी जल्दी से उठा और दैनिक क्रिया कलापों से निपट मधुर की प्रतीक्षा करने लगा।
लगभग एक घंटे की प्रतीक्षा के बाद मधुर महोदय नुमाया हुए।
मां दोनों को नाश्ता लेकर चली गई।
नाश्ते के दौरान ही मधुर ने बात शुरू की। यार मेरी एक मित्र (गिरीशा) है। जिससे थोड़े दिन पहले ही आमने सामने भेंट भी हुई थी। वैसे तो हम आभासी माध्यम से एक दूसरे से बातचीत करते रहते रहे। कभी कभार उसके मम्मी पापा से भी बात हो जाती है।
फिर-----तो समस्या क्या है?
बताता हूं न। समस्या नहीं गंभीर समस्या है। जब हम पहली बार मिले तो उसने मुझे जो सम्मान दिया , उससे मुझे थोड़ी झिझक भी हुई। क्योंकि वो मेरे पैर छूने के लिए झुकी तो कैसे भी मैं उसे रोक पाया। क्योंकि वो शायद मुझसे बड़ी ही होगी या हम उम्र होगी। वैसे भी अपनी परंपराएं भी तो बहन बेटियों को इसकी इजाजत नहीं देती। लिहाजा खुद को शर्मिंदगी से बचाने के लिए मुझे उसके पैर छूने पड़े, हालांकि इसमें कुछ ग़लत भी नहीं लगा।
अरे भाई तो इसमें ऐसा क्या हो गया जो तू इतना परेशान हैं। मैं थोड़ा उत्तेजित हो गया।
मेरी आवाज़ थोड़ा तेज थी, लिहाजा मेरी बहन लीना भागती हुई आई और आश्चर्य से पूछा लिया-क्या हुआ भैया, आप चिल्ला क्यों रहे हो?
मैं कुछ कहता,तब तक मधुर ने उसे अपने पास बैठा लिया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोला-कुछ नहीं रे। तू परेशान मत हो ,बस थोड़ी समस्या का हल निकालने की कोशिश में हैं हम दोनों।
लीना भी तैश में आ गयी, तो चिल्ला चिल्ला कर हल ढूंढना है तो आप दोनों बाहर जाकर और जोर से चिल्लाओ, हल जल्दी मिल जाएगा।
हम दोनों हड़बड़ा गये। हमें पता था कि हिटलर को गुस्सा बहुत जल्दी आता है। मधुर की स्थिति देख हमने भी शांत ही रहना ठीक समझा।
कुछ पलों बाद लीना ने मधुर से पूछा- क्या बात है भैया। हमें भी बताओ हो सकता है, शायद आपकी छुटकी कुछ हल दे सके।

ISSN: 2584-0819

मैंने देखा मधुर की आँखों में आँसू थे। जिसे उसने लीना से छुपाने की असफल कोशिश की। लीना ने उसके आँसू पोंछे और कहा - ऐसी क्या बात है कि जो मेरे शेर भाई को गमगीन किए है। मधुर ने संक्षेप में मुझसे कही बातें दोहरा दी और फिर आगे बताया कि वैसे तो हमारी बातें सामान्य ही होती रहती थी, मगर उसके भावों से यह अहसास जरूर होता था कि उसके साथ कुछ ऐसा तो घंटा या घट रहा है, जो उसे कचोट रहा है। मगर मर्यादा की अपनी सीमाएं होती हैं। लिहाजा खुलकर कभी पूँछ नहीं पा रहा।

गहरी लंबी सांस लेकर मधुर फिर बोला- मगर उस दिन जब हम मिले तो उसकी जिद को पूरा करने के लिए उसके घर तक जाना पड़ा।

वहां उसके परिवार में उसके पांच साल बच्चे के अलावा मम्मी पापा भी थे। जब मैंने उनके पैर छुए तो उन दोनों ने आशीषों का भंडार खोल दिया। यह सब अप्रत्याशित जरुर था,पर सब कुछ आँखो के सामने था।

शायद गिरीशा और हमारे बीच बातचीत के सिलसिले की उन्हें जानकारी थी।

जलपान की औपचारिकताओं के बीच ही मैंनें अपने बारे में सब कुछ बता दिया। जो उन लोगों ने पूछा।

फिर हम सब भोजन के लिए एक साथ बैठे। खाना निकालते समय गिरीशा की आँखे नम थीं।

मैंने कारण जानना चाहा तो ज़बाब पिता जी ने दिया- मुझे नहीं पता बेटा कि तुमसे ये सब कहना कितना उचित है, लेकिन तुम्हें देख एक बार तो ऐसा जरूर लगा कि मेरा बेटा लौट आया है।

मैंने बीच में ही टोका- कहाँ है आपका बेटा?

यही तो पता नहीं बेटा। इसकी शादी के बाद जब वो इसे लिवाने इसकी ससुराल गया था तभी से आज तक न तो वो इसकी ससुराल पहुँचा और न ही घर लौटा।

मैं भी आश्चर्य चकित रह गया और सोचने लगा कि आखिर ऐसा क्या और कैसे हो सकता है।

पिता जी आगे बोले- दुर्भाग्य भी शायद हमारा पीछा नहीं छोड़ना चाहता था, लिहाजा पैसों की बढ़ती लगातार मांग से मैं हार गया और बेटी को उसके पति ने घर से निकालने के लिए हर हथकंडे अपना डाले। विवश होकर इसे वापस घर ले आया। तब से ये हमारे साथ है।

उनके स्वर में बेटी के भविष्य की निराशा शब्दों के साथ डबडबाई आंखों में साफ़ झलक रही थी।

हर हथकंडे पर मैं अटक गया, लेकिन खुद को संभालते हुए सिर्फ -ये तो बहुत ग़लत हुआ, धीरे से कहा

कुछ भी ग़लत नहीं हुआ भाई जी। मेरी किस्मत का दोष है। एम बी ए किया है मैंने, अच्छी कंपनी में जॉब करती हूं, जितना वो सब मिलकर कमाते हैं उतना मैं अकेले कमाती हूं। बस नौकरानी बनना मंजूर नहीं था। फिर अपने बच्चे के भविष्य को मैं दाँव पर नहीं लगा सकती। यही कारण है कि सधवा और विधवा दोनों का सामंजस्य बिठाने को विवश हूँ। बोलते बोलते उसकी आवाज ढर्रा गई।

मैंने देखा किसी के गले से भोजन उतर नहीं रहा था।माँ जी तो फूट फूट कर रोने लगीं।

इधर लीना की आँखों से भी आँसुओं की गंगा बह रही थी।

कुछ एक घंटे का वो प्रवास मुझे अंदर तक झकझोर गया। वापसी में जब मैंने मम्मी पापा के बाद उसके पैर छूए तो वो एकदम छोटी बच्ची जैसे लिपटकर रो पड़ी। किसी तरह उसे समझा बुझाकर मैं वापस चला आया।

तब से लेकर आज तक सामान्य बातें पहले की तरह होती आ रही हैं, बीच में पिता जी से भी बात हो जाती, मगर वो अपने हर दर्द को छुपाने की कोशिश लगातार करती रहती है।

और तबसे मैं दिन रात उसकी चिंता में परेशान रहता हूं, जैसे ये सब कुछ मेरे ही कारण हुआ है अथवा मुझे उसकी खुशी वापस लाने के लिए कुछ करना ही होगा।

ISSN: 2584-0819

हर समय उसका बुझा बुझा चेहरा सामने आ जाता है, उसकी आँखें जैसे कुछ कहना चाहती हैं, मगर क्या ये बताने को वो भी तैयार नहीं है।एकदम भूतनी सी वो मेरे सिर पर सवार अपनी खुशियों की दुहाई दे रही है और मैं असहाय हो कर घुट घुटकर जीने के अलावा कुछ कर नहीं पा रहा हूँ।

उसके मम्मी पापा भी क्या करें, बेचारे असहाय से होकर जी रहे हैं, जो स्वाभाविक भी है। क्योंकि बेटे को खोने के बाद अब बेटी को खोना नहीं चाहते। मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि आखिर मेरे साथ ऐसा क्यों है? जबकि हमारा कोई रिश्ता नहीं है। जो है भी वो महज भावनाओं से है।

कुछ पलों के सन्नाटे को लीना ने कहा भैया- भावनाओं के रिश्ते खून के रिश्तों पर भारी होते हैं। रही बात गिरीशा जी के कुछ न कहने, सुनने कि तो मैं बताती हूं कि जब तक आप मिले नहीं थे, तब तक मित्रवत कुछ बातें उन्होंने आप से साझा किया होगा, शायद उससे उनके मन का बोझ कुछ कम हो जाता रहा होगा। लेकिन जब आप मिले, घर गए, उनके मम्मी पापा के साथ उन्हें भी अप्रत्याशित सम्मान दिया, तब ये रिश्ता और मजबूत हो गया। जिसे आप रिश्तों के दायरे से ऊपर ही नहीं बहुत ऊपर मान सकते हैं।

वैसे भी आज के समय में जब लोग नमस्कार, प्रणाम की भी औपचारिकता मात्र निभाने में भी संकोच करने लगे हैं,तब किसी ऐसे शख्स के पैर छूना बहुत बड़ी बात है, जिससे आप कभी मिले न हों, बहुत बड़ी बात है, ऊपर से कोई महिला अगर किसी पुरुष के पैर छूने का उपक्रम मात्र भी करती है, तब सोचिए उसके मन में उस पुरुष के लिए क्या स्थान होगा। निश्चित मानिए एक पवित्र भाव और अटूट विश्वास ही होगा।

एक लड़की सब कुछ सहकर भी अपने माँ बाप भाइयों को किसी भी हाल में दुखी नहीं करना चाहती। इसीलिए अब वो आपसे ऐसी कोई बात नहीं करना चाहतीं, जिससे आपकी पीड़ा बढ़े, ये अलग बात है कि उसे भी पता है कि आप की पीड़ा दोनों स्थितियों में बढ़नी ही है। हां! एक बात बताऊं -सच तो ये है कि मुझे लगता है कि गिरीशा जी अभी भी बहुत कुछ अपने माँ बाप से कुछ ऐसा छिपा रही हैं जो उनके साथ हुआ तो है मगर होना नहीं चाहिए था। शायद इसीलिए कि वे माँ बाप को तिल तिल कर मरते नहीं देखना चाहतीं। इसमें उनका दोष भी नहीं है, कोई भी लड़की, बहन ऐसा ही सोचती है। मैं भी एक लड़की हूँ, बेटी हूँ, बहन हूँ, मुझसे बेहतर आप दोनों नहीं समझ सकते।

विश्वास बड़ी चीज है, जो स्वत: पैदा होता है, जबरन हो ही नहीं सकती। उनका आपसे मिलना,घर ले जाकर मम्मी पापा से मिलाना , बिना किसी हिचक के आपको पकड़ कर सबके सामने रोना , आपका उसके पैर छूना क्या है? महज विश्वास, जो कोई भी नारी सहज ही हर किसी के साथ नहीं कर सकती। जैसा कि आपने खुद ही कहा कि वो आपसे बड़ी हैं या छोटी, शायद उनके साथ भी ऐसा ही है। परंतु आप दोनों ने अपने अपने भावनाओं को जिस ढंग से प्रकट किया है, उससे भाई बहन की आत्मीयता साफ झलकती है।

ऐसे में अब आपके रिश्ते मित्रता से बहुत आगे एक पवित्र भावों से बंध गए हैं। तब ये उम्मीद मत कीजिए कि अब वे आपको असमंजस में डालेंगी या अपनी पीड़ा आपको बता कर आपको दुखी करेंगी।

मगर बहन! मेरे साथ ऐसा क्यों है?

आपके साथ नहीं हैं भैया। आप सोचिए, ये सिर्फ एक भाई के साथ है, एक भाई की पीड़ा है, भाई छोटा हो बड़ा हो,बहन के लिए सिर्फ भाई होता है, जिसके रहते वो खुद को शेरनी समझती है। आप समाधान की ओर जाना चाहते हैं और वो आपको पीड़ा से बचाना चाहती हैं। आप दोनों अपने सही रास्ते पर हैं। ऐसा इसीलिए है और एक बात बताऊँ, भाई बहनों का ये लुकाछिपी का खेल नया नहीं है।

अब मुझसे रहा नहीं गया तो मैं बोल पड़ा आखिर इसका कुछ हल तो होना चाहिए न छुटकी।

हल तो आप देने वाले थे न भैया! अब दीजिए, रोक कौन रहा है- लीना थोड़े शरारती अंदाज में बोली।

ISSN: 2584-0819

यार मेरा तो दिमाग चकराने लगा ,चल तू ही कुछ बता - मैंने हार मानने के अंदाज में कहा।
कुछ पलों के सब मौन हो गए।
मधुर ने लीना को संबोधित करते हुए कहा- तेरे पास इसका कुछ हल हो तो बोल
है न भैया! बस आप मुझे उनका नं. दीजिए और निश्चिंत हो जाइए, मैं उन्हें अपनी बातों से पिघला ही लूँगी और मेरा विश्वास है कि मैं सच सामने आ जाएगा। फिर सोचेंगे कि आगे क्या किया जा सकता है। उनके मम्मी पापा को भी विश्वास में लेना होगा। क्योंकि एक बार तो शायद वे खुद को संभाल पा रहे हैं, दुबारा संभालना कठिन हो सकता है।
..... हम दोनों लीना को आश्चर्य से देख और सोच रहे रहे थे आखिर ये हिटलर इतनी समझदार हो गई।
क्या सोच रहे हो भाइयों! हिटलर पर भरोसा रखो, बस अब ये सोचो ये प्रश्न मेरी बड़ी बहन के भविष्य का है और आपको पता है, मैं हार मानने वालों में नहीं हूं-कहते हुए लीना भावुक हो गईं।
मैंने माहौल हल्का करने के उद्देश्य से मधुर से कहा -चल भाई मधुर नंबर दे दे हिटलर को। तेरे साथ ऐसा क्यों है,अब इसका जवाब मिल ही जायेगा।तेरी राम कथा का नया हनुमान जो तुझे मिल गया।
तीनों ठहाका मार कर हंस पड़े।

साहित्य, शिक्षा, सिनेमा, समाज, कला एवं संस्कृति को समर्पित त्रैमासिक ई-पत्रिका

साहित्य सिनेमा सेतु

रील से रियल लाइफ तक

ISSN: 2584-0819

मो. नंबर
9899860999

ईमेल
info@sahityacinemasetu.com
sahityacinemasetu@gmail.com

वेबसाईट
www.sahityacinemasetu.com

हमसे जुड़ने के लिए आप अपने मौलिक/स्वरचित लेख और रचनाएँ हमें हिंदी भाषा में 'नियम एवं शर्तों' के साथ भेज सकते हैं।